शुतुरमुर्ग

ज्ञानदेव अग्निहोत्री

डॉ. कौशलनाथ उपाध्याय

शुतुरमुर्ग़ की मंच-प्रस्तुति : प्रतिक्रियाएँ

हिन्दी रंगमंच में ऐसा बहुत कम हो पाता है कि कोई नयी नाट्य कृति पहले मंच की कसौटी पर कसी जाए, नाटककार की प्रस्तुतीकरण का अभिन्न अंग बनाया जाए; मूल रचना को जाँचने-परखने और अपेक्षित परिवर्तन करने का अवसर मिले और फिर उसे प्रकाशित किया जाए। हर्ष है कि यह सुखद संयोग 'शुतुरमुर्ग़' को मिला।

प्रकाशन के पूर्व ही कलकत्ते की प्रसिद्ध संस्था 'अनामिका' ने श्यामानन्द जालान के निर्देशन में कलकत्ता और दिल्ली में 'शुतुरमुर्ग़' के बारह प्रदर्शन किये। बम्बई की प्रसिद्ध संस्था 'थियटर यूनिट' ने सत्यदेव दुबे के निर्देशन में 'शुतुरमुर्ग़' के लगभग छह प्रदर्शन किये। अब इन प्रदर्शनों की प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया मेरे सामने है। और उस प्रतिक्रिया ने जिन प्रश्नों को उभारा उनके उत्तरों की खोज मुझे सार्थक लगती है।

सबसे अधिक विवाद 'शुतुरमुर्ग़' की मूल परिभाषा को लेकर हुआ। यह कहा और लिखा गया कि नाटक के शीर्षक का नाटक की कथावस्तु से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि मुख्य पात्र 'राजा' को 'शुतुरमुर्ग़' मान भी लें तो भी नाटक के मानवीय कार्य-व्यापार को देखते हुए बात सटीक बैठती नहीं। बात सटीक बैठ भी नहीं सकती, क्योंकि मेरे नाटक का 'राजा' 'शुतुरव्यवहार' से पीड़ित नहीं है। वह स्वयं शुतुरमुर्ग़ नहीं है, पर मानव-स्वभाव में दूर तक धँसी शुतुरमुर्ग़ प्रवृत्ति का उसे पूर्ण ज्ञान है। इसी ज्ञान को वह अपने स्वार्थों के लिए मोड़ लेता है। तभी तो वह अपने-आप को सचेतन शुतुरमुर्ग़ कहता है और अपनी शक्ति एवं सत्ता को सुरक्षित रखने के लिए सोने की 'शुतुर-प्रतिमा' के निर्माण और उस पर स्वर्णछत्र की स्थापना के 'महान्' कार्य में जुट जाता है। देश की समस्याओं से राजा पलायन नहीं करता, बल्कि उनका सामना करता है—समाधान ढूँढ़ता है, फिर यह समाधान कुछ भी क्यों न हो। सोने के शुतुरमुर्ग़ का निर्माण और उस पर स्वर्णप्रतिमा की स्थापना उसका सबसे बड़ा शस्त्र है—जिसे वह लगभग सभी समस्याओं के समाधान में लगाता

है। और यह शस्त्र उसे मानव-स्वभाव में व्याप्त 'शुतुरमुर्ग़ी' प्रवृत्तियों से मिला है। इसी महान् शस्त्र से वह अपनी शक्ति और सत्ता को सुरक्षित रखता है। फिर भी अन्त में उसका विघटन होता है, पर उसका यह विघटन त्रासद नहीं है। मेरे नाटक का 'राजा' त्रासद नहीं, कमजोर और कुटिल है। अनामिका ने जिस विशेष भाव-भंगिमाओं की शैली में नाटक प्रस्तुत किया, उससे सहमत और असहमत हुआ जा सकता है, पर उसके नाटकीय प्रभाव और सफलता से इनकार नहीं किया जा सकता। प्रदर्शन अत्यन्त सफल थे।

सत्यदेव दुबे की व्याख्या के चरमोत्कर्ष में जब राजा (सूत्रधार) यह स्वीकार करता है कि सब-कुछ उसे मालूम था, तब प्रेक्षकों में से एक व्यक्ति उठकर पिस्तौल से राजा की हत्या कर देता है (यहाँ तक सहमत हुआ जा सकता है। कभी-कभी जो अनकहा होता है—वही अपेक्षित प्रभाव है। यह निश्चित अन्त का आरम्भ संकेतित करता है)। हत्या के पहले चारों मन्त्रियों ने क्रमशः जॉनसन, माओ, स्टालिन और सी. पी. आई. के मुखौटे पहन रखे हैं, और राजा की मृत्यु के साथ ही पृष्ठभूमि से 'वन्दे मातरम्' का समवेत स्वर उभरता है। इस अन्त का नाटक की कथावस्तु से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं। निर्देशक सत्येदव दुबे इसे स्वीकार भी करते हैं, पर वे दर्शकों को सुख का भाव देकर घर भेजने के पक्ष में नहीं; अस्तु यह 'टीज़र'। 1969 में 'नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा' के ग्रीष्म नाट्य समारोह में मोहन महर्षि ने 'शुतुरमुर्ग़' का प्रदर्शन किया। मूल नाटक के आलेख के साथ अराजक स्वतन्त्रताएँ ली गयीं और 'चौंका देनेवाली शैली' में नाटक प्रस्तुत किया गया। किसी एक नाटक की इतनी संयोजित हत्या शायद पहले कभी नहीं की गयी।

'अनामिका' की 'स्टाइलाइज़्ड' शैली और 'थियेटर यूनिट' की 'रियलिस्टिक' शैली ने यह समस्या—सम्भावना उत्पन्न की है कि प्रस्तुतीकरण की कौन-सी शैली 'शुतुरमुर्ग़' को अधिक प्रभावोत्पादक, नाटकीय और सशक्त रुचि सम्प्रेषण देती है। पर यह प्रश्न निर्देशकों से सम्बन्धित है जो अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार नाटक को रंग, रूप और आकार देंगे।

नाट्य आलोचकों के एक वर्ग का कथन था कि 'शुतुरमुर्ग़' मात्र एक साहित्यिक नाटक है। एक दूसरे वर्ग के अनुसार वह एक रंगमंचीय नाटक है। पर सच तो यह है कि नाट्य कृति की श्रेष्ठता का मूल्यांकन रंगमंचीय और साहित्यिक दृष्टि से अलग-अलग नहीं हो सकता और न ये

दोनों एक-दूसरे पर आधारित हैं। वास्तविकता तो यह है कि एक का अस्तित्व ही दूसरे का कारण है। एक है, इसीलिए दूसरा है।

'शुतुरमुर्ग़' के शिल्प के बारे में एक मजेदार बात और सामने आयी। कुछ आलोचकों ने यह कहा और लिखा कि 'शुतुरमुर्ग़' में परम्परागत नाट्य रूढ़ियों से ख्वाहमखाह विद्रोह किया गया है। कुछ ने कहा कि 'ऊलजलूल,' 'फ़ार्स' और यथार्थवादी शैलियों का अजीब मिश्रण किया गया है। और कुछ ने यहाँ तक कहा कि सारा शिल्प नाटक के कथ्य पर आरोपित है। ऐसे विद्वान् आलोचकों से मुझे सिर्फ यही कहना है कि 'शुतुरमुर्ग़' में जो शिल्प मैंने चुना है उसका उद्देश्य अकारण ही वर्तमान और परम्परागत नाट्य रूढ़ियों को तोड़ना नहीं था और न ही उनका अन्धानुसरण था। 'शुतुरमुर्ग़' के कथ्य को मैं केवल उसी शिल्प में कह सकता था जिसमें मैंने कहा है। क्योंकि इस नाटक के कथ्य से ही शिल्प का जन्म हुआ है। एक अन्तिम वर्ग आलोचकों का और है जिसके अनुसार 'शुतुरमुर्ग़' के शिल्प और कथ्य ने हिन्दी और भारतीय रंगमंच में एक नयी नाट्य परम्परा स्थापित की है और प्रस्तुतीकरण की नयी-नयी शैलियों को संकेतित किया है। यदि इस कथन को सच माना जाय, तो यह मात्र एक संयोग है, अधिक से अधिक एक सुखद संयोग।

—ज्ञानदेव अग्निहोत्री

8/77, आर्यनगर,
कानपुर-2
(पहले संस्करण से)

शुतुरमुर्ग़

पात्र

राजा
रानी
रक्षामन्त्री
भाषणमन्त्री
महामन्त्री
विरोधीलाल
मामूलीराम
दासी
मरता हुआ मनुष्य

(रंगशाला की बत्तियाँ बुझते ही प्रकाश का केन्द्रित वृत्त मुख्य यवनिका के सामने पड़ता है। सूत्रधार मंच पर आता है। वह काले रंग का दुशाला ओढ़े है

सूत्रधार : (दर्शकों से) नमस्कार और स्वागत। मेरा नाम सूत्रधार लेकिन मैं कुछ दूसरे प्रकार का सूत्रधार हूँ। दरअसल अपने ही जीवन का सूत्रधार हूँ। मैंने स्वयं ही अपने जीव की यवनिका उठायी, स्वयं ही मुख्य पात्र का अभिनय किय और अपने ही कौतुक-सृजन का प्रेक्षक रहा। मैंने स्व अपने लिए घटनाओं और स्थितियों का निर्माण किया। वक की दीवार पर मैंने अपनी, सिर्फ अपनी परछाईं टाँगने क प्रयास किया। भावनाओं और संवेगों के ज्वार-भाटे मैंने उठाये और उनकी उत्तुंग तरंगों पर खुद ही सवारी की। स्वयं ही अपना सर्वनियामक, अपना स्रष्टा हूँ (क्षणि विराम) या यों कहिए कि था। लीजिए, मैं तो अपने जीव का नाटक प्रस्तुत करने लगा। तनिक ठहर जाँइए, मैं अप वह परिवेश धारण कर लूँ जिसे मैं अन्तिम बार धारण कि था। (काला दुशाला हटाता है, अन्दर से राजसी परिधा चमकने लगते हैं।) और वह सोने का शुतुरमुर्ग़ जो मे राज्यचिह्न था (पहनता है।) शुतुरमुर्ग़—आह! कितना प्या पक्षी है। जब नग्न सत्य उसे चारों ओर से घेर लेते हैं औ वह भाग नहीं पाता तो आँखों-समेत वह अपनी चोंच रेत डुबो देता है और पलायन की उस सम्पूर्ण अनुभूति में य कल्पना करता है कि उसे कोई नहीं देख रहा है—उसे को नहीं समझ रहा है—उसे कोई नहीं जान रहा है और व सुरक्षित है। लेकिन सचेतन शुतुरमुर्ग़ अच्छी तरह जानता कि उसे सब देख रहे हैं, सब समझ रहे हैं, सब जान रहे

और वह सुरक्षित नहीं है। ऐसा ही एक नाटक मेरी शुतुरनगरी में खेला गया। अब तो आप समझ गये होंगे कि मैं एक राजा हूँ। सच ही मैं एक राजा हूँ और अब मैं आपका आवाहन करता हूँ कि आप मेरे साथ-साथ, मेरे अनुभवों के मध्य से होकर यात्रा करें। हाँ—एक बात मैं आपको याद दिलाता हूँ कि यह सब महज एक नाटक है—क्योंकि इस मंच पर प्रस्तुत होनेवाली चीज जिन्दगी नहीं हो सकती। वह तो, सिर्फ नाटक हो सकता है। जिन्दगी का नाटक, जिन्दगी लगनेवाला और जिन्दगी से पैदा होनेवाला नाटक। लीजिए, मैं तो बहकने लगा। हाँ, अब मैं 'मैं' नहीं रहा। राजा हो गया हूँ न। इसलिए अब मेरा मैं 'हम' हो गया। **(अचानक बिलकुल राजा की तरह)** हम, हम, हम, शुतुरनगरी के सर्व नियामक, राजाओं के राजा, महाराजा **(क्षणिक विराम)** लेकिन हमारा राजमहल कहाँ है? हमारा राजमहल?

(मुख्य यवनिका तुरत हट जाती है और मंच पर प्रकाश आ जाता है। शुतुरनगरी के राजकीय महल का एक कक्ष दिखता है। ऊपर की ओर ठीक बीचोंबीच एक श्वेत सिंहासन को जाती आयताकार सीढ़ियाँ। सिंहासन में छत्र के स्थान पर शुतुरमुर्ग़ की चोंच। राजा शान से आकर सिंहासन पर बैठता है। उसके हाथ की लकड़ी राजदण्ड है। बगल में एक मधुर आवाज का घण्टा लगा है। राजा उसे बजाता है। तुरत ही मंच पर पूर्ण प्रकाश आ जाता है। राजा मुँह पर वस्त्र रखकर मजे से खर्राटे भरने लगता है। तभी वातावरण मंगलवाद्यों से गूँजने लगता है। दर्शकों की तरफ से देखे जाने पर ऊपरी मंच की बायीं ओर से रानी, दासी, भाषणमन्त्री और महामन्त्री आते हैं। ये सब एक छोटे-से जुलूस में हैं। मंगलवाद्य बजते रहते हैं। नेपथ्य से 'महाराज की जय हो' के नारे लगते हैं। दासी के हाथ में एक थाल है जिसमें चन्दन, रोली इत्यादि हैं। जुलूस धीरे-धीरे सिंहासन के नीचे आकर सादर खड़ा होता है। राजा को खर्राटे लेता देखकर सब पात्र एक-दूसरे के मुँह की ओर देखते हैं। अन्त में भाषणमन्त्री साहस करके आगे बढ़ता है।)

भाषणमन्त्री : महाराज की जय हो।

(राजा अब भी सो रहा है।)

भाषणमन्त्री : **(जोर से)** महाराज की...

सब लोग : जय हो।

(राजा का प्रत्युत्तर में जोरदार खर्राटा)

भाषणमन्त्री : **(और जोर से)** महाराज की...

सब लोग : जय हो।

(राजा अपनी आँखें खोलता है।)

भाषणमन्त्री : महाराज! हम आपका अभिनन्दन करने आये हैं।

राजा : अभिनन्दन?

भाषणमन्त्री : हाँ, महाराज! शुतुरमुर्ग़ की स्थापना का कार्य अब अपने चौबीसवें वर्ष में है।

राजा : **(सुखद आश्चर्य)** भाषणमन्त्री!

भाषणमन्त्री : इस चौबीसवीं वर्षगाँठ पर हमारा हार्दिक अभिनन्दन स्वीकार कीजिए।

राजा : **(भावुकता से)** भाषणमन्त्री! इतनी ऐतिहासिक घटना और हम भूले जा रहे थे। चौबीस वर्ष! लम्बे चौबीस वर्ष बीत गये और हमें ऐसा लगता है कि अभी यह कल की बात है। कितना महान् था वह क्षण जब पहली बार हमारे मस्तिष्क में शुतुरमुर्ग़ की प्रतिमा स्थापित करने की बात आयी थी। आह! विचार कितनी महान् और तीव्र क्रान्ति करते हैं! शुतुरमुर्ग़ की स्थापना का महान् विचार कैसे दावानल की तरह सारे देश में फैल गया। कैसे उसके लिए धन जुटा, कैसे महान् प्रतिभाएँ, महान् वास्तुशिल्पी और श्रमकार—वह सब तो अब इतिहास हो चुका है। रह गया है इस सामूहिक सृजन-भावना का एक अद्वितीय प्रतीक जो शुतुरनगरी के अन्दर कहीं धीरे-धीरे ऊँचा उठता जा रहा है। आह! मेरा सोने का शुतुरमुर्ग़ एक दिन विशालकाय रूप धारण कर लेगा। इतिहास-पुरुष की तरह उसका महाकाय, मांसल व्यक्तित्व आकाशगंगा तक ऊँचा उठ जाएगा। वही—वही होगा मेरे जीवन की सम्पूर्ण सार्थकता का क्षण।

भाषणमन्त्री : (सोल्लास) शुतुरमुर्ग़ की...

सब लोग : जय हो!

भाषणमन्त्री : शुतुरमुर्ग़ की...

सब लोग : जय हो!

भाषणमन्त्री : महाराज, अब हम आपका अभिनन्दन करना चाहेंगे।

(राजा सिर झुका देता है—रानी मुसकराते हुए राजा को तिलक लगाती है—पृष्ठभूमि से मंगलवाद्य)

राजा : हम आप सबके बड़े आभारी हैं कि आपने हमारा सम्मान किया; वैसे अभिनन्दन कृतिकार का नहीं कृतित्व का होना चाहिए।

भाषणमन्त्री : महाराज, आप में तो दोनों का समन्वय है। अब मैं आप से प्रार्थना करूँगा कि आप राष्ट्र के नाम सन्देश प्रसारित करें।

राजा : **(खड़ा होकर)** समयोचित बात कही है आपने! **(क्षणिक विराम)** शुतुरमुर्ग़ का दर्शन राष्ट्र का परम सत्य बने और उसका आचरण राष्ट्रीय आचरण संहिता—यही हमारा सन्देश है।

(राजा एक हाथ ऊँचा करके खड़ा हो जाता है, रानी आरती उतारती है। तभी पृष्ठभूमि से क्रोधित भीड़ का शोर उभरता है। भीड़ नारे भी लगा रही है—'राजा मुरदाबाद,' 'शुतुरमुर्ग़ का नाश हो।' राजा तथा मन्त्रिगण स्तम्भित रह जाते हैं।)

राजा : (सक्रोध) भाषणमन्त्री, हम यह क्या सुन रहे हैं।

भाषणमन्त्री : महाराज, अगर आज्ञा हो तो पता लगाकर बताऊँ।

राजा : आज्ञा है।

(भाषणमन्त्री का तेजी से प्रस्थान)

रानी : महाराज, मुझे तो ऐसा लग रहा है कि राज्य के नागरिक आपका अभिनन्दन करने आये हैं।

राजा : महारानी, स्वरों के कम्पन से ही हमें सत्य का आभास हो जाता है और हम कह सकते हैं कि यह स्वर अभिनन्दन के नहीं हैं।...दासी!

दासी : महाराज!

राजा : रक्षामन्त्री को भेजो।

दासी : जो आज्ञा।

(दासी का प्रस्थान)

राजा : महारानी, हमें एकान्त चाहिए।

(रानी सिर झुकाकर चली जाती है।)

राजा : महामन्त्री!

महामन्त्री : महाराज!

राजा : अभी राजमहल के बाहर की हवा में तैरते हुए जो स्वर आये उनके बारे में आपका क्या मत है?

महामन्त्री : महाराज, वे सब प्रगति के स्वर हैं।

राजा : क्या मतलब?

महामन्त्री : मतलब यह कि क्रियाओं का जो जाल आपने रचा है, यह सब उसकी प्रतिक्रियाएँ हैं।

राजा : **(गम्भीरता से)** क्रियाओं की प्रतिक्रिया।

(भाषणमन्त्री का तेजी से प्रवेश)

भाषणमन्त्री : **(घबराया हुआ)** महाराज...महाराज...राजमहल के बाहर उत्तेजित समूह खड़ा है। वे लोग नारे लगा रहे हैं और शुतुरमुर्ग़ को विध्वंस करने की धमकी दे रहे हैं।

राजा : भाषणमन्त्री, हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि हमारे मन्त्रिगण ठीक कार्य नहीं कर रहे हैं।

महामन्त्री : मेरे विचार से ये विरोधी तत्त्व ठीक कार्य नहीं कर पा रहे हैं। इनकी अपनी सीमाएँ हैं। यह बात दूसरी है कि इन्हें हमारी सीमाओं का ज्ञान न हो।

भाषणमन्त्री : फिर हमारी चुस्ती और मुस्तैदी भी कुछ कम नहीं; गत वर्ष की राजाज्ञा के बाद से तो हम समूहों को भीड़ में बदलने का कार्य भी सफलता के साथ करने लगे हैं।

राजा : वह तो ठीक है लेकिन राजमहल के सामने खड़ा हुआ यह समूह—इसका अन्त क्यों नहीं हुआ?

भाषणमन्त्री : महाराज हमारे प्रयास में कोई ढील नहीं, लेकिन बुरा हो उस विरोधीलाल का। इधर हमने समूहों को भीड़ में बदला और उधर उसने भीड़ को फिर समूह में बदल दिया। महाराज, अद्‌भुत तेज है इस विरोधीलाल की वाणी में।

राजा : विरोधीलाल! ऐसा लगता है यह नाम पहले भी कभी सुना है।

महामन्त्री : पढ़ा भी होगा, महाराज! राजनैतिक व्याकरण पढ़ते समय यह नाम प्रायः आता है।

राजा : (**भाषणमन्त्री से**) विरोधीलाल का पूरा परिचय?

भाषणमन्त्री : वह इन बचे-खुचे समूहों का नेता है, महाराज, और आपकी नीतियों का घोर शत्रु।

राजा : (**साश्चर्य**) हमारी नीतियों का घोर शत्रु? महामन्त्री, शुतुरनगरी के सबसे बड़े सत्यवादी की हैसियत से बतलाइए—क्या हमारी कोई नीतियाँ हैं?

महामन्त्री : शुतुरनगरी के एकमात्र सत्यवादी की हैसियत से मैं जो कुछ कहूँगा, सच कहूँगा, पूरा सच कहूँगा और सच के सिवा कुछ न कहूँगा। महाराज की सिर्फ एक नीति है (**विराम**) कि इनकी कोई नीति नहीं।

राजा : (**उत्तेजित**) सुन लिया आपने भाषणमन्त्री! आश्चर्य है कि जो बात हमारी शुतुरनगरी में सबको मालूम है, वह इस विरोधीलाल को नहीं मालूम। अब प्रश्न यह है कि वह हमारा व्यक्तिगत शत्रु क्यों है? आखिर वह क्या चाहता है? क्या कहता है?

भाषणमन्त्री : महाराज, वह कहता है कि देश का सारा धन, सारी प्रतिभा, सारे उपकरण महज एक शुतुरमुर्ग़ की प्रतिमा बनाने में लगाये जा रहे हैं—

राजा : और...

भाषणमन्त्री : देश में गरीबी है, लोग भूखों मर रहे हैं, तन ढकने को कपड़ा नहीं, रहने को मकान नहीं...

राजा : और...

भाषणमन्त्री : राजमहल की ईंट से ईंट बजा देंगे, और क्षमा कीजिएगा महाराज, राजा की दाढ़ी-मूँछ काट लेंगे।

राजा : (**मुसकराकर**) कितना मूर्ख है यह विरोधीलाल! क्या उसे यह भी नहीं मालूम कि हम दाढ़ी-मूँछ नहीं रखते।

(**रक्षामन्त्री का प्रवेश**)

रक्षामन्त्री : महाराज की जय हो!

राजा : क्या समाचार है, रक्षामन्त्री?

रक्षामन्त्री : राजमहल के सामने प्रदर्शन हो रहा है महाराज, उग्र प्रदर्शन!

राजा : सुरक्षा प्रबन्ध कैसे हैं?

रक्षामन्त्री : एकदम उच्च स्तर के; शुतुरनगरी के कोने-कोने में सुरक्षा सैनिक नियुक्त हैं। हर दिशा में गुप्तचरों का दल घूम रहा है। सभी अधिकारियों और सैनिकों को कवच बाँट दिये गये हैं। इन कवचों पर आग, पानी, कंकड़-पत्थर के साथ-साथ नारे और गालियों का भी कोई असर नहीं होगा। अब रहा राजमहल—सो उसकी सुरक्षा का मैंने एक नया ढंग निकाल लिया है।

(**कौतुक से**) मैंने राजमहल के चारों ओर महीन बुनाई का एक रेशमी जाल लगा दिया है। अगर प्रदर्शनकारी कुछ फेंकें-फाँकेंगे तो वह उसमें उलझकर रह जाएगा और अपने राजमहल का बाल भी बाँका न होगा।

राजा : लेकिन प्रदर्शनकारियों की कुछ आवाजें? इनके बारे में क्या सोचा है?

रक्षामन्त्री : (**मुसकराकर**) वही तो सबसे असम्भव कार्य है जिसे हम सम्भव करने जा रहे हैं। हमारे विशेषज्ञ बराबर यह सोच रहे हैं कि विरोधियों की आवाज कैसे बन्द की जाए?

महामन्त्री : महाराज, विरोध की साफ-सुथरी आवाज बन्द करने का प्रयास मत कीजिए। फिर तो आप सत्य का गला ही घोंट देंगे।

राजा : (**मुसकराकर**) हम सिर्फ असत्य का गला घोंटेंगे, महामन्त्री। दरअसल हमें अखण्ड शान्ति चाहिए ताकि हम एकाग्रचित्त होकर अपने परमसत्य की स्थापना कर सकें और हमारे परमसत्य का प्रतीक शुतुरमुर्ग़ स्थापित हो सके। सत्यमेव जयते।

(**राजा शान्ति से अपने सिंहासन पर बैठ जाता है। तभी बाहर से क्रुद्ध भीड़ का कोलाहल पुनः उभर कर विलीन होता है।**)

भाषणमन्त्री : (**उत्तेजित**) अब यह विरोधीलाल एक समस्या बनता जा रहा है।

राजा : **(शान्ति से)** समस्याएँ खुद ही अपना समाधान होती हैं, भाषणमन्त्री।

रक्षामन्त्री : लेकिन महाराज, यह विरोधीलाल एक विशेष समस्या है।

राजा : तो उसका समाधान भी विशेष होगा।

भाषणमन्त्री : क्षमा करें महाराज, विरोधीलाल के अस्तित्व का अर्थ आप गलत आँक रहे हैं।

रक्षामन्त्री : मुझे कहना तो नहीं चाहिए महाराज, लेकिन विरोधीलाल बड़ा ही तेजस्वी है।

भाषणमन्त्री : और उसके शब्दों में जादू है, जादू!

रक्षामन्त्री : वह जब तक जीवित है, विरोध का ज्वालामुखी बराबर फूटता रहेगा।

महामन्त्री : **(गम्भीरता से)** और वह सदैव जीवित रहेगा।

राजा : **(व्यंग्य से)** क्यों? क्या वह अमर है?

महामन्त्री : नहीं, महाराज, विरोध का दर्शन अमर है। वह नहीं तो कोई और उत्तराधिकार में विरोध पाता रहेगा, राजमहल के सामने प्रदर्शन होते रहेंगे और एक दिन इतिहास बदल जाएगा।

राजा : तब तक एक इतिहास बन चुकेगा, महामन्त्री। हमारा शुतुरमुर्ग़ तब तक इतना ऊँचा उठ जाएगा कि यह सब क्षुद्र इतिहास-प्रवर्तक बौने लगेंगे—शुद्ध बौने!

महामन्त्री : तो भी कालचक्र की गति नहीं रुकेगी और सत्य उद्घाटित होकर रहेगा और...

राजा : **(बीच में)** और शुतुरनगरी का विघटन हो जाएगा और शुतुर-प्रतिमा का अन्त। **(मुसकराकर)** प्रश्न आदि और अन्त का नहीं। वर्तमान का है।

महामन्त्री : वर्तमान इतना सरल और संक्षिप्त नहीं है महाराज, कि उसे आप परिभाषित कर सकें।

राजा : महामन्त्री, हम आपके बढ़ते हुए युग-बोध की प्रशंसा करते हैं पर वर्तमान का यथार्थ हम आप से ज्यादा समझते हैं।

(पृष्ठभूमि से क्रुद्ध भीड़ का शोर उभर कर विलीन होता है)

और इसीलिए हम विरोधीलाल से भयभीत नहीं। सच तो यह है कि जब तक हमारा सोने का शुतुरमुर्ग़ बनकर पूरा नहीं हो जाता और उस पर स्वर्णछत्र की स्थापना नहीं हो जाती तब तक हम किसी से भयभीत नहीं।

(महारानी का तेजी से प्रवेश। उनके हाथ में एक दर्पण है।)

रानी : पर मैं भयभीत हूँ।

राजा : महारानी!

रानी : मैं सचमुच भयभीत हूँ।

राजा : क्या हुआ महारानी?

रानी : मैं अपने कक्ष में दर्पण के सामने अपने केश सँवार रही थी। तभी एक पत्थर का टुकड़ा दनदनाता हुआ आकर सीधा मेरे दर्पण को लगा और यह चारों कोणों से टूट गया।

राजा : रक्षामन्त्री, आप तो कह रहे थे कि आपके सुरक्षा-प्रबन्ध अभेद्य हैं?

महामन्त्री : क्षमा करें महाराज, कहीं कोई त्रुटि रह गयी होगी।

रानी : लेकिन महाराज, अगर रक्षामन्त्री जी की त्रुटि से मेरा अंग भंग हो जाता तो क्या होता? इन्हें दण्ड मिलना चाहिए।

रक्षामन्त्री : **(भयभीत)** महारानी!

राजा : हमें दुःख है, महारानी, कि हम आपसे सहमत नहीं।

रानी : महाराज!

राजा : रक्षामन्त्री को तो पुरस्कार मिलना चाहिए। हम तो रक्षामन्त्री के आभारी हैं कि इन्होंने हमारी सुरक्षा-व्यवस्था की एक त्रुटि हमें इस प्रकार दिखलायी। कम-से-कम अब हम उसे दूर तो कर सकेंगे। हम जानते हैं कि इसमें व्यय होगा, लेकिन वह हमें स्वीकार है।

रक्षामन्त्री : महाराज की जय हो।

(रानी अपने हाथ का दर्पण राजा की ओर बढ़ाती है)

रानी : परन्तु महाराज, देखिए तो क्या दुर्दशा हो गयी है मेरे दर्पण की!

राजा : **(अचानक प्रसन्नता से)** महारानी... महारानी... यह क्या... अरे कितनी अद्भुत बात है! इसमें तो मेरे शुतुरमुर्ग़ का चित्र उभर आया है... देखो... देखो...दर्पण ऐसा टूटा है कि मेरे शुतुरमुर्ग़ की सजीव आकृति बन गयी है, महारानी! हम चाहते हैं कि हमारे राज्य के सारे दर्पण विरोधियों के सामने कर दिये जाएँ। वे अपना सही प्रतिबिम्ब देखने के लिए उन्हें

तोड़ देंगे और इस प्रकार असंख्य शुतुरमुर्गों की रचना होगी।

महामन्त्री : आप धन्य हैं प्रभु! तुक भरी बेतुकी बातें, आदर्शहीन आदर्श और तर्कहीन तर्कों का सत्य तो कोई आप से सीखे।

राजा : महामन्त्री, हम आपकी सत्यवादिता की प्रशंसा करते हैं लेकिन आपका सत्य व्यावहारिक नहीं। **(रानी से)** महारानी, शुतुरनगरी के विधान के अनुसार दूसरों द्वारा धोखे से निर्मित इस अपूर्व कलाकृति का सृजनकर्ता हम तुम्हें ठहराते हैं और घोषणा करते हैं कि आज से तुम हमारे राज्य की कलामन्त्री हुईं। सत्यमेव जयते।

(रानी राजा से दर्पण लेकर प्रसन्नता से उसे चूमती है और फिर रक्षामन्त्री के पास सलज्ज भाव से आती है।)

रानी : मैं आपकी बहुत आभारी हूँ, रक्षामन्त्री जी। यदि आपकी सुरक्षा-व्यवस्था में यह ढील न होती तो मुझे कलामन्त्री का पद कदापि न मिलता। कोटिशः धन्यवाद स्वीकार करें।

रक्षामन्त्री : (गद्गद) महारानी!

(रानी का धीरे-धीरे प्रस्थान। रानी टूटे दर्पण को अपने सिर पर दोनों हाथों से सँभाले है। सभी मन्त्री आदर से झुकते हैं। क्षण भर बाद दूसरी ओर से दासी का प्रवेश। उसके हाथ में एक तीर है।)

दासी : महाराज की जय हो! अभी-अभी यह तीर राजकीय कक्ष के अन्दर आकर गिरा है।

(राजा तीर लेता है। दासी सविनय अन्दर चली जाती है)

राजा : **(तीर में लगे पत्र को देखकर)** यह तो कोई पत्र जान पड़ता है। महामन्त्री जी, देखिए तो इसमें क्या है?

(राजा पत्र देखकर सिंहासन पर जा बैठता है। सभी मन्त्री निकट आते हैं।)

महामन्त्री : (पढ़कर) विरोधीलाल का पत्र है। आप से मिलना चाहता है।

राजा : पर हम उससे नहीं मिलना चाहते।

भाषणमन्त्री : बिलकुल ठीक! महाराज का निर्णय अन्तिम है।

रक्षामन्त्री : विरोधीलाल से मिलना तो दूर, हमें तो उसकी कल्पना से भी घृणा है।

महामन्त्री : हम जिसे घृणा कहते हैं, वस्तुतः वह भय है।

राजा : तो आप यह कहना चाहते हैं कि हम विरोधीलाल से भयभीत हैं।

महामन्त्री : हाँ महाराज, आप भयभीत हैं। तभी तो आप सत्य से साक्षात्कार नहीं करना चाहते।

राजा : महामन्त्री!

महामन्त्री : और इसीलिए आपको विरोधीलाल से जरूर मिलना चाहिए।

राजा : क्यों?

महामन्त्री : क्योंकि सत्य से साक्षात्कार करना आवश्यक है और आपके साथ अनिवार्यता।

राजा : क्या सचमुच विरोधीलाल सत्य का इतना बड़ा सन्देश-वाहक है?

महामन्त्री : सत्य क्या है महाराज? हमारी शुतुरनगरी में केवल एक ही सत्य है जिसे मैं जान पाया हूँ। वह यह कि सजग और संवेदनशील होकर जीना सम्भव नहीं है और विरोधीलाल का यही दुर्भाग्य है।

राजा : **(कुछ सोचकर)** ठीक है, तो हम उससे मिलेंगे।

भाषणमन्त्री : **(प्रतिवाद)** कुछ भी हो महाराज, आपका विरोधीलाल से मिलना ठीक नहीं है।

रक्षामन्त्री : भाषणमन्त्री ठीक कहते हैं, महाराज। विरोधीलाल से मिलने का अर्थ है हमारी शक्ति और सत्ता का उपहास।

भाषणमन्त्री : महाराज, यदि आप विरोधीलाल से मिले तो हमारा घोर अपमान होगा।

रक्षामन्त्री : महाराज, आप अपनी स्पष्ट असहमति दें।

राजा : **(मुसकराकर)** हमारी असहमति है।

महामन्त्री : महाराज!

राजा : **(मुसकराकर)** हमारी असहमति विरोधीलाल को क्षुद्र सिद्ध करने के लिए है और आदमी एक बार क्षुद्र सिद्ध हो गया तो उस पर आक्रमण सरल हो जाता है।

महामन्त्री : तो आप विरोधीलाल से मिलेंगे।

राजा : हाँ, पर थोड़े विलम्ब से।

(दासी का तीर लेकर प्रवेश)

दासी : महाराज की जय हो।

(महामन्त्री तीर ले लेता है—दासी का प्रस्थान)

महामन्त्री : **(पत्र पढ़कर)** विरोधीलाल का दूसरा पत्र। वह आप से तुरत मिलना चाहता है।

राजा : **(मुसकराकर)** देखता हूँ, विरोधीलाल का धैर्य समाप्त हो रहा है, यह शुभ चिह्न है। आइए, तब तक हम विषयान्तर करें। अब पहली बात तो हम यह जानना चाहेंगे कि हमारे शुतुरमुर्ग़ का निर्माण-कार्य पूरा हुआ, या नहीं?

भाषणमन्त्री : शुतुरमुर्ग़ का निर्माण-कार्य पूरा हो चुका है, महाराज! बल्कि अब तक तो उस पर स्वर्णछत्र भी लग चुका होगा।

राजा : **(प्रसन्न)** स्वर्णछत्र भी लग चुका है! हम अपने विकासमन्त्री की कार्यक्षमता के आभारी हैं। भाषणमन्त्री! उन्हें इसी क्षण बुलवाइए, हम उन्हें राष्ट्रीय सम्मान देना चाहेंगे।

भाषणमन्त्री : लेकिन महाराज वे अस्वस्थ हैं।

राजा : अस्वस्थ हैं?

महामन्त्री : पोषक तत्त्वों की अधिकता से उन्हें अपच हो गया है महाराज!

भाषणमन्त्री : शुतुरमुर्ग़ को बनवाने और उस पर स्वर्णछत्र की स्थापना के काम ने उन्हें बहुत व्यस्त रखा। वे कन्दमूल फल खाकर रात-दिन काम करते रहे। अधिक फल खा लेने से उन्हें भयंकर अपच हो गया।

राजा : पर हमारे शुतुरमुर्ग़ पर स्वर्णछत्र की स्थापना तो हो गयी है न?

भाषणमन्त्री : इस बात का निश्चित समाचार हमें मिला है।

राजा : **(भावावेश में)** तो इसका अर्थ यह है कि हम शुतुरमुर्ग़ के उद्घाटन का प्रबन्ध अभी से करें। आह! कितना महान् होगा वह क्षण जब हमारे शुतुरमुर्ग़ का अनावरण होगा! सज्जनो, शुतुरमुर्ग़ के उद्घाटन का प्रबन्ध हम परमसत्यवादी महामन्त्री जी को सौंपते हैं और इस कार्य के लिए एक सहस्र स्वर्णमुद्राएँ स्वीकृत करते हैं। **(महामन्त्री से)** आप प्रसन्न हैं न?

महामन्त्री : महाराज, दुख और सुख को निरपेक्ष भाव से लेना मैंने सीखा

है। मेरी नियुक्ति से आप यदि प्रसन्न हैं तो—मैं भी हूँ, महाराज।

राजा : हम प्रसन्न हैं।

(महामन्त्री अभिवादन करता है। राजा दाहिना हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है।)

सत्यमेव जयते।

(दासी का पुनः प्रवेश—उसके हाथ में एक तीर है।)

दासी : यह नया तीर है, महाराज।

राजा : हमें मालूम है, दासी। द्वारपाल से कह दो, विरोधीलाल को हमसे मिलने की आज्ञा है।

(दासी का प्रस्थान)

भाषणमन्त्री : तो... क्या आप विरोधीलाल से यहीं, इसी राजकीय कक्ष में मिलेंगे?

राजा : **(मुसकराकर)** अवश्य।

रक्षामन्त्री : **(भयभीत)** परन्तु महाराज, इस मिलन से पूर्व हमें विरोधीलाल की तलाशी ले लेनी चाहिए। वह कोई गुप्त अस्त्र-शस्त्र न लिये हो। आपकी व्यक्तिगत सुरक्षा का प्रश्न है।

राजा : तलाशी लेने की कोई आवश्यकता नहीं, रक्षामन्त्री! विरोधीलाल से मिलने की आज्ञा देकर हमने उसे निःशस्त्र कर दिया है।

भाषणमन्त्री : विरोधीलाल के आगमन पर मुझे क्या करना होगा, महाराज?

राजा : आप केवल मौन रहें।

रक्षामन्त्री : और मैं?

राजा : आप भी। **(महामन्त्री से)** और आप भी।

महामन्त्री : मैं मौन रहने का प्रयास करूँगा महाराज, लेकिन वचन नहीं दे सकता।

राजा : आप वचन न दें। सिर्फ इतना करें कि आप वहीं बोलें जहाँ हम आपको बोलने का संकेत करें।

(पृष्ठभूमि से विरोधीलाल की आवाज सुनाई पड़ने लगती है। राजा तुरत गम्भीर मुद्रा बनाकर सिंहासन पर बैठ जाता है। तीनों मन्त्री सिंहासन के पीछे प्रतिमाओं की तरह खड़े हो

जाते हैं। **विरोधीलाल नारे लगा रहा है : राजा—मुरदाबाद, शुतुरमुर्ग़ का नाश हो। विरोधीलाल का ऐसे प्रवेश मानो वह भागता आ रहा हो।]**

विरोधीलाल : (गरजकर) सिंहासन पर बैठे हुए व्यक्ति से मैं एक प्रश्न पूछ सकता हूँ? आप ही हैं—शुतुरनगरी के महाराज?

राजा : (शान्ति से) हाँ, हम हैं शुतुरनगरी के महाराज, और तभी सिंहासन पर बैठे हैं।

विरोधीलाल : (व्यंग्य से) मैंने तो सुना था कि आप भूमि पर बैठते हैं और आपके योग्य मन्त्री सिंहासन पर!

राजा : आपने कई बातें मिथ्या सुनी हैं। उनकी चर्चा हम आगे करेंगे। पहले इनका परिचय प्राप्त कीजिए। ये हैं परमसत्यवादी महामन्त्री, ये भाषणमन्त्री और ये रक्षामन्त्री। **(सभी मन्त्री बारी-बारी से अभिवादन करते हैं।)**

विरोधीलाल : हूँ! तो यह है वह यन्त्र जिससे आप शुतुरनगरी का शासन करते हैं।

राजा : यन्त्र! आप हमारे योग्य मन्त्रियों को यन्त्र कहकर उनके साथ अन्याय कर रहे हैं।

विरोधीलाल : मुझे मालूम है—आपने इन्हें कभी यह महसूस नहीं होने दिया कि ये यन्त्र हैं। तभी तो आप देश के साथ इतना बड़ा षड्यन्त्र कर सके।

राजा : षड्यन्त्र ? विरोधीलाल जी, आप हमारे विरुद्ध राजनीतिक प्रचार कर रहे हैं। हमने ठीक सुना था, आप हमारा व्यक्तिगत विरोध करते हैं।

विरोधीलाल : मैं आपका विरोध नहीं करता, आपकी नीतियों का विरोधी हूँ।

राजा : नीतियाँ ?

विरोधीलाल : जी हाँ, नीतियों के नाम से प्रचलित आपके कुछ सिद्धान्त।

राजा : सिद्धान्त?

विरोधीलाल : अब यह न कहिएगा कि अपनी सुविधा के लिए बनायी हुई नीतियाँ या सिद्धान्त या वो जो कुछ भी हैं, उनका ज्ञान आपको नहीं। क्या आप नहीं जानते कि जीवन की विषम समस्याएँ शुतुरनगरी को पीस रही हैं? अनास्था, भय, भूख

और दिशा-हीनता का अदृश्य कोहरा धीरे-धीरे उसे निगल रहा है। दुखान्त नाटक। शुतुरनगरी की पृष्ठभूमि पर मानव-जीवन एक दुखान्त नाटक बनकर रह गया है। और इस नाटक के सूत्रधार आप हैं। पर इतना याद रखिए, अब परदा गिरने में ज्यादा देर नहीं है।

राजा : **(गम्भीरता से)** सत्यमेव जयते!

विरोधीलाल : आह! आपका यह प्यारा वाक्य—सत्यमेव जयते, अर्थात् असत्य जीत रहा है तो फिलहाल उसे जीतने दो, अन्त में तो सत्य ही जीतेगा। अर्थात् अगर असत्य, झूठ, छल-कपट, दुष्टता, अन्याय एक हजार वर्ष तक रहे तो उसे रहने दो, अन्त में तो सत्य, न्याय और प्रेम की विजय होगी ही। **(कटुता से)** सत्यमेव जयते—अर्थात् एक हजार वर्ष और।

राजा : हम आपकी बातों से उत्तेजित नहीं होते।

विरोधीलाल : आप इन बातों से उत्तेजित नहीं होते, यही तो हमारे देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

राजा : हमारी शान्ति और संयम, हमारी शक्ति का प्रतीक है, आप उसे जो भी नाम दें।

विरोधीलाल : मैं उसे नाम दूँगा? यह नाम तो स्वयं आपने अपनी काली करतूतों से कमाया है। हर वह शब्द जो नीचताओं का पर्यायवाची है, आपका ही नाम है।

भाषणमन्त्री : विरोधीलाल जी, महाराज को धारावाहिक गालियाँ देना आप जैसे पढ़े-लिखे व्यक्ति को शोभा नहीं देता।

रक्षामन्त्री : इन सब अशिष्टताओं का परिणाम भयंकर हो सकता है। **(महामन्त्री चुप हैं।)**

राजा : महामन्त्री, आपका कथन?

महामन्त्री : महाराज, हर वह कथन नैतिक कथन है जो दूसरों को प्रभावित और परिवर्तित कर सके।

राजा : हम आपका आशय नहीं समझे।

महामन्त्री : मेरे विचार से आप विरोधीलाल की बातों को नहीं सुन रहे थे जो अभी इन्होंने कहीं। आप उन बातों को सुन रहे थे जो विरोधीलाल ने अभी नहीं कही हैं। मेरा सुझाव है कि एकान्त में आप दोनों सार्थक सवालों की तलाश करें।

(तीनों मन्त्री जाते हैं)

राजा : **(सिंहासन से नीचे उतरकर)** इस एकान्त का लाभ उठाकर पहली बात तो हम यह कहेंगे कि अपने प्रति सहज और सच्चा होना जीवन-संघर्ष के लिए अपर्याप्त ही नहीं बल्कि एक प्रकार की अयोग्यता है।

विरोधीलाल : **(व्यंग्य से)** एकान्त का लाभ उठाकर दूसरी बात भी कह डालिए।

राजा : आप अपना मुँह बन्द करने के लिए कितनी स्वर्णमुद्राएँ लेंगे?

विरोधीलाल : **(क्रोधित)** महाराज, आप अपनी स्वर्णमुद्राओं से मुझे खरीदना चाहते हैं? आत्मा बेच कर यदि मुझे सारा विश्व मिल जाय तो भी मेरे किस काम का?

राजा : हम सारा विश्व नहीं दे सकते, केवल स्वर्णमुद्राएँ दे सकते हैं। सोच लीजिए, अपनी वाणी देने के लिए आप क्या लेना चाहेंगे?

विरोधीलाल : मेरी वाणी बिकाऊ नहीं है महाराज, क्योंकि वह सारे देश की वाणी है।

राजा : **(क्रोधित)** तो फिर हमें आपकी वाणी का दमन करना होगा, जो हम सरलता से कर सकते हैं।

विरोधीलाल : पर आप सारे देश का दमन न कर पाएँगे। आज सारे देश का स्वर एक है।

राजा : **(क्रोधित)** देश... देश... देश...। आप जानते हैं आप क्या प्रलाप कर रहे हैं। हम आपको देश का प्रतिनिधि मान कर बात नहीं कर रहे हैं। **(मुसकराकर)** हम आपको सिर्फ आपका प्रतिनिधि मानते हैं। **(क्रोधित)** विरोधीलाल जी, अभी सही अर्थों में यातनाएँ आपने भोगी नहीं हैं। अभी तो आप अपनी भीड़ के प्रिय नेता हैं। कल्पना कीजिए, यदि आप भीड़ से दूर कर दिये जाएँ? यदि आपको उस जय-जयकार से निर्वासित कर दिया जाए जिसके आप आदी हो चुके हैं? यदि आप से वह पुष्पमालाएँ, अभिनन्दन-मंच, श्रोता छीन लिये जाएँ? अच्छी तरह सोच लीजिए इन बातों को, और फिर कह दीजिए कि मेरे प्रस्ताव को ठुकराकर आप कष्टों के चक्रव्यूह में न फँसेंगे? **(विराम)** विरोधीलाल

जी, मानव-जीवन के सब महान् परिवर्तन समझौते से सम्भव हुए हैं। विरोधीलाल जी! हमें शान्ति चाहिए—अखण्ड शान्ति—ताकि हम अपने शुतुरमुर्ग़ की स्थापना कर सकें।

विरोधीलाल : शुतुरमुर्ग़! आह! कितना प्यारा पक्षी है! जब नग्न सत्य उसे चारों ओर से घेर लेते हैं और वह भाग नहीं पाता तो आँखों समेत वह अपनी चोंच रेत में डुबो देता है और पलायन की उस सम्पूर्ण अनुभूति में यह कल्पना करता है कि उसे कोई नहीं देख रहा है, कोई नहीं जान रहा है, कोई नहीं समझ रहा है और वह सुरक्षित है!

राजा : लेकिन सचेत शुतुरमुर्ग़ अच्छी तरह जानता है कि उसे सब देख रहे हैं, सब समझ रहे हैं और वह सुरक्षित नहीं है।

विरोधीलाल : फिर वह क्या करता है?

राजा : सोने के शुतुरमुर्ग़ का निर्माण और स्वर्णछत्र की स्थापना।

विरोधीलाल : और यदि स्वर्णछत्र की स्थापना न हुई हो तो?

राजा : तो! तो पुनः प्रयास करता है।

विरोधीलाल : तो सुन लीजिए, आपके शुतुरमुर्ग़ पर स्वर्णछत्र की स्थापना नहीं हुई है।

राजा : **(अवाक्)** यह आप क्या कह रहे हैं विरोधीलाल जी?

विरोधीलाल : ठीक वही जो आप सुन रहे हैं। शुतुरमुर्ग़ पर सुनहरी छतरी नहीं बनी है। उसका सारा धन आपके विकासमन्त्री हड़प गये हैं, उन्हें अपच हो गया है, और इसीलिए वे आजकल आपसे नहीं मिल रहे हैं।

राजा : विकासमन्त्री ने यह क्या किया?

विरोधीलाल : वही जो आप सारे देश के साथ कर रहे हैं। परन्तु प्रश्न तो यह है कि आखिर आप सोने का शुतुरमुर्ग़ क्यों बनवा रहे हैं? देश का सारा धन, सारी प्रतिभा आप क्यों बरबाद कर रहे हैं? शुतुरमुर्ग़ की प्रतिमा पर स्वर्णछत्र लगवाने जैसा बेहूदा काम आप क्यों कर रहे हैं ?

राजा : आपके इन प्रश्नों से कहीं अधिक सार्थक प्रश्न इस समय हमारे सामने है। **(निश्चय)** भ्रष्टाचारी विकासमन्त्री को हम ऐसा दण्ड देंगे कि सारा देश काँप उठेगा !

(राजा सिंहासन के पास आता है)

हम, शुतुरनगरी के महाराज, यह घोषणा करते हैं कि विकासमन्त्री अब इस क्षण से हमारे विकासमन्त्री नहीं रहे। उन्होंने देश के धन का दुरुपयोग करके अक्षम अपराध किया है। हम उन्हें अपराधी घोषित करते हैं।

(घण्टा बजाकर) सत्यमेव जयते!

(राजा सीधा विरोधीलाल के पास आता है)

आपने देखा, हम न्याय करने में देर नहीं करते। हम आपके आभारी हैं कि आपने हमें यह सूचना दी। अब एक निवेदन और है। **(क्षणिक विराम)** क्या आप शुतुरनगरी के विकासमन्त्री बनना पसन्द करेंगे।

विरोधीलाल : **(अचानक जैसे पिघल गया हो)** महाराज... मैं... मैं...

राजा : (गरजकर) मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिए। क्या आप शुतुरनगरी के विकासमन्त्री बनना पसन्द करेंगे?

विरोधीलाल : (हकलाकर) महाराज...आप महाराज...आप...वह पहले व्यक्ति हैं जिसने मेरी प्रतिभा को पहचाना है। हाँ...महाराज ...मुझे शुतुरनगरी का विकासमन्त्री बनना स्वीकार है। एक बार नहीं...मुझे मन्त्री बनना हजार बार स्वीकार है।

(राजा के चरणों में) महाराज की जय हो।

(राजा सिंहासन की ओर मुड़ता है, विरोधीलाल पीछे-पीछे है।)

विरोधीलाल : (उत्तेजित) मैं...मैं वचन देता हूँ महाराज, कि शुतुरमुर्ग पर स्वर्णछत्र की स्थापना पुनः होगी। अल्प समय और अल्प धन में जो कार्य आपके भूतपूर्व विकासमन्त्री न कर पाये... वह मैं करूँगा...वह मैं करूँगा महाराज!

राजा : **(सिंहासन पर बैठकर मुसकराते हुए)** हमें आपकी क्षमता पर विश्वास है, विरोधीलाल जी।

विरोधीलाल : अब एक कृपा और कीजिए। आज से मुझे विरोधीलाल न कहें।

राजा : (प्रसन्नता से) हमें स्वीकार है, हम आज से आपको एक नाम देंगे—'सुबोधीलाल'।

(विरोधीलाल राजा के चरणों में झुकता है। राजा दाहिना हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है—सत्यमेव जयते। फिर घण्टा बजाता है। तीनों मन्त्रियों का प्रवेश)

राजा : (प्रसन्न) सज्जनो, शुतुरनगरी के नये विकासमन्त्री से मिलिए।

भाषणमन्त्री : (अभिवादन) बधाई है।

रक्षामन्त्री : (अभिवादन) बधाई है।

महामन्त्री : बधाई है सुबोधीलाल जी को।

विरोधीलाल : (आश्चर्य) आपको...आपको...मेरा नया नाम कैसे मालूम हुआ?

महामन्त्री : **(मुसकराकर)** हम अपने महाराज को पहचानते हैं न! नया काम देने के साथ-साथ वे नया नाम भी देते हैं। विरोधीलाल के बाद सुबोधीलाल—यही एक नाम निकटतम था।

(भीड़ का कोलाहल उभरता है, दासी का प्रवेश)

दासी : महाराज की जय हो, मामूलीराम जी मिलना चाहते हैं।

राजा : मामूलीराम? यह कौन व्यक्ति है?

विरोधीलाल : राजमहल के सामने खड़ी हुई भीड़ का अंग।

राजा : **(जैसे सब याद आ गया हो)** भीड़—हाँ! भीड़ का अस्तित्व तो हम जैसे भूल ही गये थे। मामूलीराम को अन्दर भेज दो, दासी।

(दासी का प्रस्थान)

सुबोधीलाल जी, क्या सोचा है आपने इस भीड़ के बारे में ?

विरोधीलाल : वही सोच रहा हूँ।

राजा : क्या हम सोचने में आपकी सहायता करें?

विरोधीलाल : यही सोच रहा हूँ।

राजा : शायद आपको कुछ प्रश्नों के उत्तर चाहिए। उत्तर, जो आप मामूलीराम को देना चाहेंगे।

विरोधीलाल : जी हाँ।

राजा : आप मामूलीराम से स्पष्ट कह दें कि बिना शक्ति के देश की सेवा नहीं हो सकती और बिना पद के शक्ति नहीं मिल सकती—इसीलिए आपने शुतुरनगरी के विकासमन्त्री का पद स्वीकार कर लिया है। सत्यमेव जयते।

(राजा का प्रस्थान, विरोधीलाल चिन्तित)

महामन्त्री : धर्म-संकट और उच्च अभिलाषाएँ—इन दोनों का कोई मेल नहीं है, सुबोधीलाल जी। एक का अन्त ही दूसरे का आरम्भ है।

विरोधीलाल : मैं इन परिभाषाओं को लेकर चिन्तित नहीं हूँ, महामन्त्री। न ही मुझे उत्तरों का प्रश्न व्यथित किये है। मेरी समस्या इन सब बातों के सरलीकरण की है। मामूलीराम इस परिवर्तन को सहज रूप से स्वीकार करे यही मेरी समस्या है।

(मामूलीराम का प्रवेश)

मामूलीराम : **(सभय)** मैं...मैं अन्दर आ जाऊँ।

विरोधीलाल : आओ, मामूलीराम।

(मामूलीराम मन्त्रियों को सभय देखता है—सीधा विरोधीलाल के पास आता है।)

मामूलीराम : आप...आपने तो बड़ी देर लगा दी, विरोधीलाल जी। बाहर सब लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। राजा से कुछ बातचीत हुई? क्या निर्णय हुआ?

विरोधीलाल : **(अचानक)** हमारी जीत हुई है, मामूलीराम।

मामूलीराम : **(प्रसन्नता से)** सच?

विरोधीलाल : हाँ...महाराज ने मेरी शर्त मान ली है।

मामूलीराम : **(प्रसन्नता से)** शर्त मान ली है! हे भगवान, बड़ा उपकार किया तुमने!

विरोधीलाल : अब एक-एक करके सब कष्ट दूर हो जाएँगे।

मामूलीराम : भरपेट भोजन मिलेगा?

विरोधीलाल : मिलेगा...

मामूलीराम : रहने को मकान?

विरोधीलाल : वह भी...।

मामूलीराम : पहनने को कपड़े?

विरोधीलाल : वो भी मिलेंगे, मामूलीराम—सब-कुछ मिलेगा...सब-कुछ मिलेगा। दूध-घी की नदियाँ बहेंगी।

मामूलीराम : तो फिर जल्दी चलिए विरोधीलाल जी, यह शुभ समाचार हम सबको सुनाएँ।

विरोधीलाल : इस काम के लिए मैं तुम्हें नियुक्त करता हूँ—मामूलीराम।

मामूलीराम : लेकिन—लेकिन—मैं ठीक से सब बातें नहीं कह पाऊँगा।

विरोधीलाल : तुम जिस भी ढंग से कहोगे, भीड़ के लिए वही ठीक होगा।

मामूलीराम : लेकिन आप क्यों नहीं चलते?

विरोधीलाल : अभी मेरा राजमहल से जाना ठीक नहीं। जब तक महाराज का निर्णय कार्य रूप में नहीं बदल जाता तब तक मुझे यहीं रहना चाहिए।

मामूलीराम : हाँ, यह तो है। कहीं महाराज अपनी बात से बदल गये तो मुश्किल होगी।

विरोधीलाल : और बात बदल गयी तो बदल गयी। तुम कितने समझदार हो मामूलीराम!

मामूलीराम : **(सलज्ज भाव से)** यह सब आप बड़ों की कृपा है।

(बाहर से पुनः भीड़ का शोर)

विरोधीलाल : अब तुम्हें जाना चाहिए...वे सब शोर मचा रहे हैं।

मामूलीराम : ठीक है, अब मैं जाता हूँ। **(मुड़कर)** पर मैं उनसे क्या सन्देश कहूँ?

विरोधीलाल : सबको सब-कुछ मिलेगा—और...

मामूलीराम : **(बीच में)** सच की जीत हुई।

विरोधीलाल : मामूलीराम, अब तुम्हें अपनी भाषा सुधारनी चाहिए। सच की जीत हुई नहीं। सत्यमेव जयते।

(सप्रयास) सत्यमेव जयते...जयते!

मामूलीराम : लेकिन यह शब्द बहुत बड़ा है और कठिन भी।

विरोधीलाल : बड़े शब्दों का मतलब देर से समझ में आता है मामूलीराम, पर एक बार समझ में आ जाय तो देर तक रहता है। समझे? तो क्या कहोगे?

मामूलीराम : सबको सब-कुछ मिलेगा और सत्यमेव जयते—**(प्रसन्नता से चीखता है)** सबको सब-कुछ मिलेगा और...और सत्यमेव जयते।

(यही चिल्लाते हुए मामूलीराम का प्रस्थान)

(विरोधीलाल मन्त्रियों की ओर देखता है, महामन्त्री को छोड़कर सब खुल कर हँसते हैं। अन्दर से दासी का प्रवेश)

दासी : **(ऊँचे स्वर में)** सावधान...सावधान...शुतुरनगरी के महाराज पधार रहे हैं।

(सभी मन्त्री सादर खड़े होते हैं। अन्दर से राजा का प्रवेश, सभी मन्त्री आदर से सिर झुकाते हैं, राजा सिंहासन पर जा बैठता है।)

राजा : शुतुरनगरी के संविधान के अनुसार हम घोषणा करते हैं कि सुबोधीलाल जी का शपथ-समारोह तुरत सम्पन्न किया जाए, महामन्त्री जी।

महामन्त्री : महाराज।

राजा : आप सुबोधीलाल जी को शपथ-समारोह के रीति-रिवाज समझाएँ, रक्षामन्त्री जी!

रक्षामन्त्री : महाराज!

राजा : आप सुबोधीलाल जी को शपथ-समारोह के वस्त्र पहनाकर लाएँ।

रक्षामन्त्री : जो आज्ञा महाराज। आइए, सुबोधीलाल जी।

(महामन्त्री और रक्षामन्त्री के बीच में होकर विरोधीलाल अन्दर जाते हैं।)

राजा : भाषणमन्त्री! मामूलीराम जब गया तो उसके चेहरे के भाव कैसे थे?

भाषणमन्त्री : महाराज, जब वह आया तो चिन्तित था और जब गया तो प्रसन्न।

राजा : **(सिंहासन से उतरकर)** उसे बहुत समय तक प्रसन्न नहीं रहना चाहिए।

भाषणमन्त्री : क्यों महाराज?

राजा : यह तो आप मानते हैं कि मामूलीराम भीड़ का अंग है?

भाषणमन्त्री : मामूलीराम स्वयं भीड़ है, महाराज!

राजा : इस भीड़ ने अपनी आस्था और विश्वास विरोधीलाल को दिये थे।

भाषणमन्त्री : हाँ महाराज।

राजा : और अब विरोधीलाल सुबोधीलाल हो गया है।

भाषणमन्त्री : हाँ, महाराज।

राजा : इसलिए अब भीड़ को सही बात तुरत मालूम हो जानी चाहिए।

भाषणमन्त्री : क्यों महाराज?

राजा : ताकि उसकी आस्था और विश्वासों की गति हम दूसरी ओर मोड़ सकें।

भाषणमन्त्री : हाँ, महाराज।

राजा : हम प्रयास करेंगे कि भीड़ हमारी हो सके।

भाषणमन्त्री : सत्य है, महाराज।

राजा : और विरोधीलाल को हम भीड़ से सम्पूर्ण काट सकें।

भाषणमन्त्री : तर्कसंगत है, महाराज।

राजा : इसलिए मामूलीराम को तुरत नाराज करना आवश्यक है।

भाषणमन्त्री : आप धन्य हैं, महाराज।

राजा : **(गम्भीरता से)** मामूलीराम को एक बार और राजमहल में लाना होगा।

भाषणमन्त्री : राजमहल में लाना होगा?

(महामन्त्री का प्रवेश)

राजा : हाँ, भाषणमन्त्री, विरोधीलाल के शपथ-समारोह पर मामूलीराम राजमहल आएगा। वह अपनी आँखों से सब कुछ देखेगा। फिर वह बाहर जाएगा, उसका कटु अनुभव भीड़ को मालूम होगा। विरोधीलाल को भीड़ सदैव के लिए अलग कर देगी। वह सम्पूर्ण हमारा हो जाएगा। और दिशाहीन भीड़ को हमारी होने का अवसर मिलेगा।

(भाषणमन्त्री का प्रस्थान)

महामन्त्री : दिशाहीनों को सही दिशा देना इतना सरल नहीं है महाराज, और मामूलीराम का जाग्रत होना भी ठीक नहीं।

राजा : क्यों?

महामन्त्री : मामूलीराम को इतने बड़े कटु अनुभवों के आमने-सामने रखना उचित नहीं। कटु अनुभव बहुत अच्छे शिक्षक होते हैं, महाराज।

राजा : और तभी तो मामूलीराम को कटु अनुभव होने चाहिए।

महामन्त्री : महाराज! कटुता मनुष्य को तुरत सजग बना देती है और सजगता व्यक्ति को असन्तोषी। इस असन्तोष का ज्ञान ही क्रान्ति का प्रारम्भ है।

राजा : तो अभी तक यह सब क्यों नहीं हुआ?

महामन्त्री : जब तक विरोधियों का अनुवाद सुबोधियों में होता रहेगा

तब तक यह सब सम्भव नहीं।

राजा : और मामूलीराम?

महामन्त्री : मामूलीराम और उसके साथियों की अपनी सीमाएँ हैं। उन्हें इन सीमाओं में रहने देना ही हमारे लिए शुभ है।

राजा : **(हँसकर)** इसका अर्थ यह है कि आप मामूलीराम और उसकी स्मरण-शक्ति को बिलकुल नहीं समझते। हम मामूलीराम को अच्छी तरह समझते हैं। वह कुछ क्षणों के लिए कटु भले ही हो जाय पर इस कटुता से उसमें क्रान्ति उत्पन्न हो सकती है, ऐसा हम नहीं मानते।

(पृष्ठभूमि में मंगलवाद्य, दासी का प्रवेश)

दासी : **(घोषणा)** सावधान! सावधान! शुतुरनगरी की महारानी नये विकासमन्त्री श्री सुबोधीलाल के शपथ-समारोह में भाग लेने के लिए पधार रही हैं।

(महारानी का प्रवेश)

राजा : आइए, महारानी।

दासी : **(घोषणा)** नये विकासमन्त्री श्री सुबोधीलाल जी!

(अन्दर से विरोधीलाल का प्रवेश। मंगलवाद्य बजते हैं। वह सिर से पैर तक एक जाल के अन्दर है। जाल की बागडोर रक्षामन्त्री के हाथ में है। वे दोनों धीरे-धीरे सिंहासन के पास आते हैं। विरोधीलाल राजा-रानी को झुककर अभिवादन करता है। विरोधीलाल धीरे-धीरे एक कोने में खड़ा हो जाता है।)

रक्षामन्त्री : (राजा से) समारोह के इन विशेष वस्त्रों की बागडोर अब आप सँभालें, महाराज।

(राजा बागडोर सँभालता है)

राजा : हम, शुतुरनगरी के महाराज--यह घोषणा करते हैं कि महारानी अब हमारे नये विकासमन्त्री का तिलक करें और आरती उतारें।

(रानी मुसकराते हुए दासी से तिलक का थाल लेकर विरोधीलाल की ओर जाती है। रानी जाल के ऊपर ही मस्तक पर तिलक लगाती है, फिर तीन बार आरती उतारती है। मंगलवाद्य बजते हैं।)

राजा : हम, शुतुरनगरी के महाराज यह घोषणा करते हैं कि परमसत्यवादी महामन्त्री शपथ-समारोह सम्पन्न कराएँ।

महामन्त्री : **(विरोधीलाल के पास जाकर)** शुतुरनगरी के नये विकासमन्त्री सुबोधीलाल जी, मैं आपका स्वागत करता हूँ। **(फिर ऊँचे स्वर में)** शुतुरनगरी के परम सत्यवादी की हैसियत से मैं जो कुछ कहूँगा सच कहूँगा, पूरा सच कहूँगा और सच के सिवा कुछ न कहूँगा। अब शुतुरनगरी के महाराज की आज्ञानुसार नये विकासमन्त्री श्री सुबोधीलाल शपथ लेंगे। **(विरोधीलाल से)** सुबोधीलाल जी, अब एक-एक शब्द दोहराइए। मैं विरोधीलाल उर्फ सुबोधीलाल--

विरोधीलाल : मैं विरोधीलाल उर्फ सुबोधीलाल--

महामन्त्री : कुलदेवता शुतुरमुर्ग़ को साक्षी करके यह शपथ लेता हूँ--

विरोधीलाल : कुलदेवता शुतुरमुर्ग़ को साक्षी करके यह शपथ लेता हूँ--

महामन्त्री : कि मैं आधा वचन से और आधा कर्म से अर्थात् महाराज का पूरा अनुयायी रहूँगा।

विरोधीलाल : लेकिन, महामन्त्री जी, मैं तो मन, वचन और कर्म तीनों से महाराज का अनुयायी रहना चाहता हूँ।

महामन्त्री : **(क्रोधित)** सुबोधीलाल, यह क्या अशुभ बात कहते हैं। क्या मैंने आपको अन्दर यह नहीं समझाया था कि केवल वचन की सौगन्ध लेनी है। कर्म तो आपकी इच्छा पर होगा। और मन का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। यदि महाराज को मालूम हो गया कि आपके पास आत्मा जैसी चीज अब भी है तो अनर्थ हो जाएगा। भलाई इसी में है कि आप तुरत स्वीकार कर लीजिए कि आपके पास आत्मा नहीं है।

विरोधीलाल : मैं विरोधीलाल उर्फ सुबोधीलाल यह स्वीकार करता हूँ कि मेरे पास आत्मा जैसी कोई चीज नहीं है। मैं कुलदेवता शुतुरमुर्ग़ को साक्षी करके यह शपथ लेता हूँ कि आधा वचन और आधा कर्म से अर्थात् महाराज का पूरा अनुयायी रहूँगा।

राजा : **(एक हाथ उठाकर)** सत्यमेव जयते।

सारे मन्त्री एक साथ : सत्यमेव जयते।

(मामूलीराम तथा भाषणमन्त्री का प्रवेश)

मामूलीराम : सत्यमेव जयते।

(सबका ध्यान उसकी ओर जाता है।)

भाषणमन्त्री : जनता के प्रतिनिधि श्री मामूलीराम जी नये विकासमन्त्री को बधाई देंगे।

मामूलीराम : **(प्रसन्नता से)** तो...तो...अपने विरोधीलाल जी वही हो गये जो आप सब हैं। हे भगवान, तू बड़ा न्यायी है। आखिर सच की जीत हुई। **(पास जाकर)** बधाई है विरोधीलाल जी। लेकिन आप...आप...इस जाल के अन्दर क्यों हैं?

विरोधीलाल : **(अचानक कराहते हुए)** मामूलीराम, मेरा जीवन तो काँटों की सेज है। तुम सब आराम से रह सको इसलिए मुझे कष्ट पाना ही होगा। देखो...देखो...मेरी आँखों में आनन्द के आँसू हैं। तुम सबके सुख के लिए मैंने ये सब कष्ट ओढ़ लिये हैं।

मामूलीराम : **(दुखी स्वर)** विरोधीलाल जी, आपके त्याग को हम कभी नहीं भूल सकते। आप—आप सचमुच महान् हैं। आपने हम लोगों के लिए क्या नहीं किया—और अब आप इस जाल को ओढ़े हैं ताकि हमें आराम मिल सके।

विरोधीलाल : भैया मामूलीराम, यह किसी से कहना नहीं कि मुझे जाल में फँसा कर यातनाएँ दी गयीं। लोगों के दुखी होने की बात से मेरा कलेजा फटा जाता है। सबसे यही कहना कि मैं आराम से हूँ—मुझे खूब सुख है—खूब चैन है।

मामूलीराम : **(भरे कण्ठ से)** यही कहूँगा—बिलकुल यही कहूँगा।

राजा : शपथ-समारोह समाप्त हुआ। परम सत्यवादी महामन्त्री जी अब कुलदेवता शुतुरमुर्ग़ के पूजन के लिए नये विकासमन्त्री को अन्दर ले जाएँगे।

महामन्त्री : चलिए, सुबोधीलाल जी।

(रक्षामन्त्री जाल की बागडोर पकड़ लेता है। विरोधीलाल अन्दर की ओर चलने लगता है। आगे-आगे विरोधीलाल पीछे-पीछे बागडोर पकड़े महामन्त्री—उसके पीछे रानी और दासी हैं।)

मामूलीराम : तो फिर मैं कब आऊँ—विरोधीलाल जी?

रक्षामन्त्री : मामूलीराम, अगर तुमने ज्यादा असभ्यता दिखलायी तो हम तुम्हें राजमहल से बाहर फेंक देंगे।

भाषणमन्त्री : हाँ! हम बिलकुल यही करेंगे।

मामूलीराम : लेकिन मुझे यह तो पूछ लेने दीजिए कि फिर कब आऊँ ? **(मुड़कर)** विरोधीलाल जी!

रक्षामन्त्री : असभ्य, जंगली, मैं अभी तुम्हें द्वारपाल से बाहर फिंकवाता हूँ।

मामूलीराम : मुझे मंजूर है। लेकिन यह तो पूछ लेने दीजिए कि फिर कब आऊँ, विरोधीलाल जी!

(रक्षामन्त्री और भाषणमन्त्री एक साथ प्रहार करते हैं—मामूलीराम कोने में जा गिरता है। दोनों मन्त्री हाथ झाड़कर ऐसे चल देते हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो। वे जुलूस में सम्मिलित होकर अन्दर जाते हैं।)

मामूलीराम : **(बड़बड़ाते हुए)** लेकिन यह तो मुझे पूछना ही पड़ेगा कि फिर कब आऊँ? **(राजा सिंहासन से नीचे आता है।)**

मामूलीराम : **(सभय)** आप...आप कौन हैं?

राजा : महाराज।

मामूलीराम : महाराज? आपको मेरा प्रणाम है, महाराज। मुझे...मुझे विरोधीलाल जी से मिलना है।

राजा : **(गम्भीरता से)** अब तुम विरोधीलाल से कभी नहीं मिल सकते।

मामूलीराम : क्यों, महाराज?

राजा : क्योंकि विरोधीलाल अब सुबोधीलाल हो गया है।

मामूलीराम : **(दुख)** यह तो बहुत बुरा हुआ महाराज! उनके माँ-बाप ने कितने मन से उनका नाम विरोधीलाल रखा था। सोचिए तो, जब उनको मालूम होगा तो वे कितने दुखी होंगे!

राजा : हम प्रसन्न हुए, मामूलीराम। तुम्हारा संकेत भीड़ से है न ? भीड़ ही तो उसकी माँ-बाप थी। उसे दुख होगा—और होना भी चाहिए।

मामूलीराम : मैं...मैं समझा नहीं, महाराज।

राजा : देखो मामूलीराम, अब सब कुछ बिलकुल स्पष्ट है। विरोधीलाल ने तुम्हें और भीड़ को धोखा दिया है।

मामूलीराम : धोखा दिया है? हे भगवान!

राजा : तुमने तो स्वयं देखा वह शुतुरनगरी का नया विकासमन्त्री हो गया है।

मामूलीराम : जब आप कह रहे हैं तो जरूर सच होगा। लेकिन महाराज, आपने इतने धोखेबाज आदमी को मन्त्री बनाया ही क्यों ?

राजा : यह राज-काज की बातें हैं, मामूलीराम। कभी-कभी बाध्य होकर हमें वह सब करना पड़ता है जो हम नहीं चाहते।

मामूलीराम : लेकिन वह सब करना तो आपको अच्छा लगता है, जो आप चाहते हैं।

राजा : हम वही सब तो करते हैं जो हमें अच्छा लगता है।

मामूलीराम : तो फिर बताइए, हमारी माँगें कब पूरी होंगी?

राजा : क्या तुम्हारी कोई माँगें हैं?

मामूलीराम : हाँ महाराज, और आप उन्हें सरलता से पूरा कर सकते हैं।

राजा : हमें उनके बारे में बतलाओ।

मामूलीराम : सबसे पहली बात तो यह कि हमें दो जून का भोजन चाहिए। फिर तन ढकने को कपड़ा और रहने को छोटा-सा घर। बस।

राजा : यह सब हम तुम्हें दे सकते हैं।

मामूलीराम : **(प्रसन्नता से)** महाराज!

राजा : हाँ मामूलीराम, यह सब हम तुम्हें दे सकते हैं। लेकिन तुम्हें भीड़ को समझाना होगा। उसे हमारे झण्डे के नीचे लाना होगा। जब तक हमारा सोने का शुतुरमुर्ग़ पूरा नहीं हो जाता—तब तक भीड़ को शान्त रखना होगा।

मामूलीराम : फिर सबको सब-कुछ मिलेगा?

राजा : हाँ मामूलीराम! पर सबसे पहले तुम्हें सब-कुछ मिलेगा ! हमारे शुतुरमुर्ग़ के पूरा होने से पहले तुम्हें और बाद में भीड़ को।

मामूलीराम : यह शुतुरमुर्ग़ कहाँ बन रहा है?

राजा : तुम कितने भोले हो मामूलीराम। सारी शुतुरनगरी जानती है कि हमारा शुतुरमुर्ग़ कहाँ बन रहा है।

मामूलीराम : एक दिन मैं भी उसे देखने जाऊँगा, आपने उसे देखा है महाराज?

राजा : उद्घाटन से पूर्व हम उसे कैसे देख सकते हैं? और उसका उद्घाटन तभी हो सकता है जब भीड़ शान्त रहे और भीड़ तभी शान्त रह सकती है जब तुम उसे समझाओ।

(पृष्ठभूमि में भीड़ का उत्तेजित शोर)

राजा : सुना तुमने, वे सब फिर आ गये हैं। वे...वे काफी उत्तेजित लग रहे हैं। सुना तुमने...वे फिर शोर मचा रहे हैं।

मामूलीराम : **(शान्ति से)** वे सब भूखे और नंगे हैं महाराज, तभी तो इतना शोर मचा रहे हैं।

राजा : **(क्रोधित)** पर क्या हमने यह नहीं कहा कि शुतुरमुर्ग़ के पूरा होने से पहले तुम्हारी और बाद में भीड़ की माँगें पूरी होंगी।

मामूलीराम : **(भोलेपन से)** यह पहले और बाद की बात मेरी समझ में नहीं आती, महाराज। हम सबकी जरूरतें आप एक साथ पूरी क्यों नहीं कर देते?

राजा : उसमें समय लगेगा मामूलीराम—समय लगेगा। और यह समय तुम ला सकते हो !

मामूलीराम : **(आश्चर्य)** मैं ला सकता हूँ?

राजा : उफ्! हम तुम्हारे स्तर पर उतरकर तुम्हें कैसे समझाएँ ? मुख्य बात भीड़ को शान्त रखने की है। हम भीड़ को शान्त रखने के और भी तरीके जानते हैं। लेकिन रक्तपात और दमन हमें प्रिय नहीं। हम इस महान् कार्य में तुम्हारे व्यक्तित्व का उपयोग करना चाहते हैं। अब हम अपनी बात अन्तिम बार कहेंगे। जब भीड़ शान्त रहेगी सब शुतुरमुर्ग़ पूरा होगा। जब शुतुरमुर्ग़ पूरा होगा तब माँगें पूरी होंगी।

मामूलीराम : लेकिन, महाराज, अगर भीड़ ने मेरी बात न मानी, तो?

राजा : हाँ, यह प्रश्न भी बड़ा सार्थक है। यदि भीड़ ने तुम्हारी बात न मानी तो? **(राजा कुछ सोचते हुए सिंहासन तक जाता है, फिर अनायास ही घण्टा बजाता है।)**

(अचानक पृष्ठभूमि से ऊँचे स्वर में रणभेरी बजती है)

मामूलीराम : यह रणभेरी क्यों बज रही है?

राजा : **(गम्भीरता से)** ऐसा लगता है कि शुतुरनगरी पर कोई बहुत बड़ा संकट आया है।

मामूलीराम : **(भयभीत)** बहुत बड़ा संकट आया है?

राजा : हाँ मामूलीराम, यह रणभेरी तभी बजती है जब शुतुरनगरी पर कोई महान् संकट आता है।

(अन्दर से रणभेरी बजाते हुए भाषणमन्त्री का प्रवेश। वह सामूहिक एकता प्रदर्शित करनेवाला एक मुखौटा लगाये है।)

भाषणमन्त्री : (घोषणा) सावधान, सावधान! शुतुरनगरी पर भयानक संकट आया है।

मामूलीराम : आप कौन हैं, श्रीमन्त?

राजा : ये भाषणमन्त्री हैं।

मामूलीराम : लेकिन ये मुखौटा क्यों लगाये हैं?

राजा : यह मुखौटा राष्ट्र के दृढ़ संकल्प और सामूहिक एकता का प्रतीक है। क्या समाचार है, भाषणमन्त्री?

भाषणमन्त्री : महाराज! शुतुरनगरी की सीमाओं पर राजा रक्तवंशी और रक्तबीज की सेनाओं का भयंकर जमाव है।

राजा : तो इसका अर्थ यह है कि रक्तवंशी पुनः आक्रमण की योजना बना रहा है।

भाषणमन्त्री : हाँ महाराज, आक्रमण किसी भी क्षण हो सकता है। और इस बार रक्तबीज भी उसके साथ है।

राजा : रक्तबीज को पिछले युद्ध में जो कड़वे घूँट हमने पिलाये--वह शायद उन्हें भूल गया है। शान्ति हमें प्रिय है लेकिन युद्ध की स्थिति आ जाने पर शुतुरनगरी पीछे नहीं हटेगी। युद्ध का उत्तर हम युद्ध से देंगे। भाषणमन्त्री! हम राष्ट्र के नाम सन्देश प्रसारित करना चाहते हैं।

भाषणमन्त्री : कीजिए, महाराज।

राजा : शुतुरनगरी एक भयानक संकट में है। हमारा बहुमुखी विकास शान्ति और मानवता के शत्रुओं को फूटी आँखों नहीं भा रहा है। वे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारी स्वतन्त्रता के खिलाफ षड्यन्त्र रच रहे हैं। वे हम पर आक्रमण करके हमें पद-दलित करना चाहते हैं। शुतुरनगरी के निवासियों से हमारी प्रार्थना है कि वे इस महान् संकट की पृष्ठभूमि पर अपने कर्तव्य पहचानें, इस सम्भावित युद्ध का मुकाबला करने के लिए सारा राष्ट्र एक व्यक्ति की तरह खड़ा हो। (दुखी स्वर) आगे एक लम्बा और कटु संघर्ष है। हम अपनी प्रजा को कष्ट, आँसू और पीड़ा के अलावा और कुछ भी

देने का वचन नहीं करते। सत्यमेव जयते!

भाषणमन्त्री : (तुरही बजाकर घोषणा) सावधान! सावधान!! शुतुरनगरी पर भयानक संकट आया है। दो-दो शत्रु हमारे देश पर आक्रमण करने आ रहे हैं। इस सम्भावित युद्ध का मुकाबला करने के लिए सारा राष्ट्र एक व्यक्ति की तरह खड़ा हो।... आगे एक लम्बा और कटु संघर्ष है। हम अपनी प्रजा को कष्ट, आँसू और पीड़ा के अलावा और कुछ भी देने का वचन नहीं करते। सावधान, सावधान!

(यही कहते हुए भाषणमन्त्री का प्रस्थान। धीरे-धीरे उसका स्वर पृष्ठभूमि में विलीन होने लगता है।)

राजा : अगर शुतुरनगरी है तो हम हैं, शुतुरनगरी न रही तो हम भी न रहेंगे।

(रक्षामन्त्री का प्रवेश। वह सामूहिक क्रोध प्रकट करनेवाला एक मुखौटा लगाये तथा युद्ध-वेश में है।)

रक्षामन्त्री : शुतुरनगरी सदैव रहेगी, महाराज।

मामूलीराम : आप कौन हैं श्रीमन्त?

राजा : ये रक्षामन्त्री हैं, मामूलीराम। यह मुखौटा हमारे राष्ट्र के सामूहिक क्रोध का प्रतीक है। क्या समाचार है रक्षामन्त्री?

रक्षामन्त्री : महाराज की जय हो। आक्रमणकारियों का सामना करने के लिए सभी प्रबन्ध हो चुके हैं। सारा देश एक अभेद्य दुर्ग की तरह अपने संकल्पों पर दृढ़ है। आज सारी शुतुरनगरी क्रोधित है, महाराज। यदि शत्रु ने आक्रमण करने का प्रयास किया तो उसे हमारे सामूहिक क्रोध की ज्वालाएँ भस्म कर देंगी। सत्यमेव जयते।

(रक्षामन्त्री का प्रस्थान। क्षणिक विराम)

मामूलीराम : अब हमारी माँगों का क्या होगा, महाराज?

राजा : (क्रोधित) तुम्हें शर्म आनी चाहिए, मामूलीराम। इतना भयंकर संकट और तुम्हें अपनी इन क्षुद्र माँगों की चिन्ता है?

मामूलीराम : (सभय) तो फिर मैं जाता हूँ, महाराज। फिर कभी आऊँगा!

राजा : हम तुम्हारे लौटने का स्वागत करेंगे, मामूलीराम। लेकिन हम तुम्हें वीर-वेश में देखना चाहते हैं, मामूलीराम। हम चाहते हैं कि तुम जब दोबारा आओ तो तुम्हारे शरीर पर कवच हो,

तुम्हारे हाथों में अस्त्र-शस्त्र, आँखों में सामूहिक क्रोध की ज्वालाएँ और राजमहल के सामने खड़ी हुई दिशाहीन भीड़ तुम्हारे नेतृत्व में हो।

मामूलीराम : **(उत्तेजित)** यही होगा, महाराज। मैं आपको वचन देता हूँ कि देश के लिए मिटनेवालों में आपका मामूलीराम सबसे आगे होगा।

(मामूलीराम अभिवादन करता है।)

राजा : हमारा आशीर्वाद है मामूलीराम, कि तुम सच्चे अर्थों में देश के कर्णधार बनो। अग्नि-परीक्षाओं में तपकर तुम्हारा व्यक्तित्व खरा निकले और तुम अजेय बनो।

(मामूलीराम पुनः अभिवादन करता है। राजा उसे दाहिना हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है। मामूलीराम के चेहरे पर ऐसे भाव हैं मानो वह जाग्रत हो रहा है। एक नये आत्मविश्वास और दृढ़ता के साथ मामूलीराम का धीरे-धीरे प्रस्थान। राजा उसे मुसकराता हुआ देखता रहता है।)

(दासी का प्रवेश)

दासी : महाराज की जय हो।

राजा : क्या समाचार है, दासी?

दासी : महाराज, राजपुरोहित जी पधारे हैं।

राजा : राजपुरोहित जी पधारे हैं? कुशल तो है?

दासी : राजपुरोहित जी आपके जन्मोत्सव में भाग लेने आये हैं।

राजा : हमारा जन्मोत्सव?

दासी : **(कमजोर आवाज)** हाँ महाराज। महारानी ने एक बहुत बड़े भोज का आयोजन किया है। आप तो जैसे सब-कुछ भूल ही गये।

राजा : **(मुसकराकर)** राज-काज के झंझटों में हम बहुत-सी महत्त्वपूर्ण बातें भूल जाते हैं। क्या-क्या आयोजन है?

दासी : सबसे पहले राजपुरोहित जी का आशीर्वचन, फिर चुनी हुई देवदासियों का नृत्य और गायन और अन्त में विशाल भोज; इस उत्सव का विशेष आकर्षण एक मंगल-गान है, महाराज, जिसे स्वयं महारानी ने लिखा है।

राजा : स्वयं महारानी ने लिखा है?

दासी : **(एक स्वर्णपत्र देकर)** यह देखिए महाराज, स्वर्णपत्र में वह गान अंकित है, भोज के पश्चात् यह स्वर्णपत्र प्रत्येक अतिथि को उपहार में दिया जाएगा।

(राजा स्वर्णपत्र पढ़ रहा है।)

दासी : शुतुरनगरी की चुनी हुई गायिकाएँ इसका अभ्यास कर रही हैं। उद्यान में सबको आपकी प्रतीक्षा है।

राजा : **(स्वर्णपत्र पढ़कर)**

ओ युगपुरुष! स्वीकार करो यह वन्दन।
शताब्दियाँ लिये खड़ी हैं रोली और चन्दन।।
तुम जियो हजारों वर्ष, तुम रहो हजारों वर्ष।
युगों तक होता रहे तुम्हारा अभिनन्दन।।

(प्रसन्नता से) काव्य...शुद्ध काव्य। हमें प्रसन्नता है कि महारानी ने शुतुरनगरी का कलामन्त्री पद स्वीकार किया। तुम कविता समझती हो दासी?

दासी : नहीं, महाराज।

राजा : आज के पहले हम भी नहीं समझते थे। पर तुम्हारी महारानी ने हमें काव्य की महान् शक्ति से परिचित कराया है।

दासी : **(कृश स्वर)** शीघ्रता करें महाराज! सब लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

राजा : **(दासी को ध्यान से देखकर)** तुम्हारा स्वर इतना कमजोर क्यों है, दासी?

दासी : **(विषयान्तर)** कुछ नहीं, महाराज। कोई विशेष बात नहीं। कार्य का बोझ है?

राजा : **(कड़े स्वर में)** हम यह नहीं मानते। हमें ठीक बात बतायी जाय।

दासी : **(कृश स्वर)** महाराज...मैंने...अन्न-जल ग्रहण करना बन्द कर दिया है।

राजा : **(आश्चर्य)** तुमने अन्न-जल ग्रहण करना बन्द कर दिया है—क्यों?

दासी : पिछली अमावस को मेरे पिता का पत्र आया था कि वे सब बहुत कष्ट में हैं।

राजा : कष्ट में हैं?

दासी : हमारे ग्राम में भयंकर अकाल पड़ा है, महाराज।

राजा : अकाल पड़ा है? लेकिन हमें तो कोई सूचना नहीं।

दासी : सूचना आप तक पहुँची न होगी, महाराज।

राजा : हमें तुम से सहानुभूति है, दासी। हमारी हार्दिक इच्छा है कि तुम सब कुछ भूलकर तुरत अन्न-जल ग्रहण करो।

दासी : **(भरे कण्ठ से)** मेरे परिवार के लोग भूखे रहें तो मैं अन्न खाकर क्या करूँगी, महाराज।

(तभी पृष्ठभूमि से महारानी द्वारा रचित मंगलगान के समवेत स्वर उभरते हैं। दासी अपने आँसू पोंछकर अन्दर चली जाती है। राजा चिन्तित हैं।)

(भाषणमन्त्री का प्रवेश)

भाषणमन्त्री : महाराज की जय हो! शुभ समाचार है, महाराज!

राजा : शुभ समाचार?

भाषणमन्त्री : हाँ महाराज—जैसे ही राजद्वार पर जाकर मैंने आपका सन्देश प्रसारित किया वैसे ही मानो दैवी चमत्कार हो गया हो। भीड़ चुपचाप अपने घर चली गयी।

राजा : हम प्रसन्न हैं, भाषणमन्त्री। शुतुरनगरी के निवासी अपने महान् कष्टों को महानता के साथ स्वीकार कर रहे हैं—यह शुभ-चिह्न है।

भाषणमन्त्री : और, महाराज, एक अशुभ समाचार है।

राजा : अशुभ समाचार?

भाषणमन्त्री : हाँ, महाराज, जब भीड़ राजद्वार से वापस चली गयी तो एक विचित्र बात पायी गयी!

राजा : विचित्र बात?

भाषणमन्त्री : लगभग दस नागरिक मरे पड़े थे। द्वारपाल का कहना है कि वे भूख लगने से मर गये।

राजा : भूख लगने से मर गये? परन्तु वे अपने घर भोजन करने भी तो जा सकते थे।

भाषणमन्त्री : महाराज, द्वारपाल कहता है कि उनका कोई घर ही नहीं है।

राजा : **(क्रुद्ध)** तो फिर वे कहीं और से भोजन कर आते और पुनः राजद्वार के सामने खड़े हो जाते।

भाषणमन्त्री : महाराज, द्वारपाल कहता है कि शुतुरनगरी में भोजन समाप्त हो गया है।

राजा : हमें दुख है, भाषणमन्त्री जी, कि अब आप द्वारपालों की बात पर काफी विश्वास करने लगे हैं। हम तो यह जानना चाहते थे कि स्वयं आप क्या कहते हैं?

भाषणमन्त्री : हमारे पास तो अभी पर्याप्त खाद्य सामग्री है, महाराज।

राजा : हम आप से सहमत हैं। हमें ऐसा लगता है कि कुछ अनाम व्यक्तियों ने आत्महत्या की है और अब भूख से मरनेवाला यह नाटक प्रचारित किया जा रहा है। भाषणमन्त्री, हम चाहते हैं कि आप तुरत जनसाधारण में इस राष्ट्रीय षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ करें।

(अन्दर से विरोधीलाल का प्रवेश)

विरोधीलाल : महाराज की जय हो!

राजा : आइए, सुबोधीलाल जी।

विरोधीलाल : अपने जन्म-दिवस पर हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिए, महाराज।

राजा : शुभकामनाओं के लिए हम आभारी हैं सुबोधीलाल जी। लेकिन हमें भय है कि हम अपने जन्मोत्सव में भाग न ले सकेंगे।

विरोधीलाल : क्यों, महाराज?

राजा : अभी कुछ अशुभ संकेत हमें मिले हैं। शुतुरनगरी के निवासी कष्ट में हैं। राष्ट्र की सीमाओं पर शत्रु-दल सक्रिय हैं। ऐसी दशा में यह समारोह हमें उचित नहीं जान पड़ता।

भाषणमन्त्री : परन्तु, महाराज, महारानी को जब यह मालूम होगा तो वे बहुत दुखी होंगी। सोचिए तो, उन्होंने कितने श्रम से उत्सव की तैयारी की है!

राजा : हमें महारानी के दुख की भी चिन्ता है। हम यह सोच रहे हैं कि महोत्सव से सम्बन्धित किसी कार्यक्रम में हम भाग न लें—पर उन्हें पूर्ववत् चलने दें।

भाषणमन्त्री : यही उचित रहेगा, महाराज।

राजा : ठीक है, आप यह प्रसारित कर दीजिए कि राष्ट्रीय संकट को देखते हुए महाराज ने अपने जन्मदिन के समारोह में भाग लेने से इनकार कर दिया है।

भाषणमन्त्री : सूचनाएँ प्रसारित होने में शीघ्रता हो—इस दृष्टि से मैंने

प्रसारणकर्ताओं का जाल बिछा दिया है, महाराज। अब इसी कक्ष से यह सब हो सकेगा **(ऊँचे स्वर में)** राष्ट्रीय संकट को देखते हुए महाराज ने अपने जन्मोत्सव में भाग लेने से इनकार कर दिया है। **(तुरत ही पृष्ठभूमि में एक पुरुष-कण्ठ यही दोहराता है—फिर कुछ दूरी से दूसरा—फिर तीसरा।)** **(अन्तर्मुख-सा)** अब हम केवल उस दिन समारोह में भाग लेंगे जिस दिन शुतुरमुर्ग़ का उद्घाटन होगा।

विरोधीलाल : शुतुरमुर्ग़ का उद्घाटन होने में अब देर नहीं, महाराज। मैं स्वर्णछत्र की स्थापना करने जा रहा हूँ। **(एक राजकीय आज्ञापत्र निकालकर)** आप यहाँ हस्ताक्षर कर दीजिए, महाराज।

राजा : **(पढ़कर)** परन्तु दो सहस्र स्वर्णमुद्राएँ तो बहुत अधिक हैं।

विरोधीलाल : पिछले विकासमन्त्री ने चार सहस्र-मुद्राओं की स्वीकृति ली थी, यह तो केवल उसका आधा है।

राजा : ठीक है, हमें स्वीकार है। **(हस्ताक्षर करता है।)**

विरोधीलाल : **(आज्ञा-पत्र लेकर)** महाराज की जय हो!

(विरोधीलाल का प्रस्थान)

भाषणमन्त्री : दो सहस्र स्वर्णमुद्राएँ तो बहुत अधिक हैं, महाराज!

राजा : हम जानते हैं, लेकिन सुबोधीलाल के लिए यह हमारी पहली स्वीकृति थी। हम उनकी उपयोगिता देख रहे हैं और उनकी उपयोगिता इस बात पर निर्भर है कि अब उनमें भीड़ को प्रभावित करने की कितनी क्षमता है।

भाषणमन्त्री : परन्तु भीड़ को प्रभावित करने का कार्य तो अब हम स्वयं अधिक कुशलता से कर रहे हैं।

राजा : राजनीति में सभी तथ्य एक साथ नहीं स्पष्ट हो जाते, भाषणमन्त्री! हम सुबोधीलाल का विघटन करेंगे, लेकिन पूरे मूल्यांकन के बाद। अस्तु यह स्वीकृति...**(भीड़ का शोर उभरता है)** यह तो भीड़ का शोर है। समझ में नहीं आता कि ये बार-बार क्यों आ जाते हैं? भाषणमन्त्री सूचनाएँ प्रसारित कीजिए।

भाषणमन्त्री : **(ऊँचे स्वर में)** शुतुरनगरी के निवासियो, सावधान! कुछ व्यक्तियों के भूख से मरने का समाचार निराधार है। **(यह स्वर पहले की तरह पृष्ठभूमि में प्रतिध्वनित होते हुए विलीन हो जाता है।)**

भाषणमन्त्री : शुतुरनगरी पर युद्ध के बादल मँडरा रहे हैं। हमें सब कुछ भूलकर इस लम्बे और कटु संघर्ष का सामना करने की तैयारी करनी चाहिए। **(पृष्ठभूमि में स्वरों की पुनरावृत्ति होती है।)**

(महामन्त्री का प्रवेश)

महामन्त्री : देश में युद्धोन्माद उत्पन्न करना ठीक नहीं है, महाराज।

राजा : **(शान्ति से)** हम उन्माद नहीं उत्पन्न कर रहे हैं। हम शुतुरनगरी के निवासियों को सम्भावित युद्ध की अग्रिम सूचना भर दे रहे हैं।

महामन्त्री : लेकिन आपकी सूचनाओं का प्रस्तुतीकरण बहुत तीव्र है। तीव्र समाचारों की प्रतिक्रिया भी तीव्र होती है, महाराज।

राजा : तो क्या आप यह स्वीकार नहीं करते कि शत्रु हमारे देश पर आक्रमण करना चाहते हैं?

महामन्त्री : यह बात मैं खुले दिल से स्वीकार करता हूँ।

राजा : और यह युद्ध कल हो सकता है।

महामन्त्री : हो सकता है।

राजा : आज हो सकता है।

महामन्त्री : सम्भव है।

राजा : अभी और इसी क्षण।

महामन्त्री : यह भी सम्भव है।

राजा : **(कौतुक से)** अब मान लीजिए कि युद्ध कल होने जा रहा है और हम उसकी सूचना इसी क्षण दे दें, तो इसमें हानि क्या है?

महामन्त्री : युद्ध एक अनिवार्य सम्भावना है, महाराज। हुए हैं और होंगे। लेकिन इन्हें राष्ट्रीय चर्चा का विषय बनाकर अपनी सुविधा के लिए मोड़ना क्या उचित है?

राजा : महामन्त्री जी—हमें शान्ति चाहिए। अब यह शान्ति हमें युद्ध से मिले या शान्ति से, हमें किसी भी मूल्य पर चाहिए ताकि हमारे परम सत्य का प्रतीक शुतुरमुर्ग़ स्थापित हो सके।

(रक्षामन्त्री का प्रवेश)

रक्षामन्त्री : महाराज की जय हो!

राजा : राजदरबार पर यह कैसा शोर है, रक्षामन्त्री?

रक्षामन्त्री : महाराज, मामूलीराम पुनः लौट आया है।

राजा : मामूलीराम पुनः लौट आया है?

रक्षामन्त्री : हाँ महाराज! भीड़ ने उसे अपना नेता चुन लिया है। वह भीड़ के सामने गम्भीरता से भाषण दे रहा है। वह कह रहा है कि भूख से मरनेवाले समाचार सच हैं।

राजा : **(सोचने का प्रयास)** इस मामूलीराम को अचानक यह क्या हो गया?

महामन्त्री : यह अचानक नहीं हुआ है, महाराज। मामूलीराम तो सभी घटनाओं का स्वाभाविक अन्त है।

राजा : क्या मतलब?

महामन्त्री : यह मामूलीराम के व्यक्तित्व का पहला विस्फोट है।

राजा : **(गम्भीरता से)** हूँ, तो इसका अर्थ यह है कि भीड़ का हमें दमन करना होगा।

महामन्त्री : और भूख? उस के बारे में क्या सोचा है?

रक्षामन्त्री : हाँ महाराज! इस समस्या का समाधान होना आवश्यक है।

राजा : समस्याओं से आप लोग इतना आतंकित क्यों हैं? क्या हमने नहीं कहा था, समस्याएँ स्वयं अपना समाधान होती हैं। हम शुतुरनगरी के महाराज इसी क्षण एक जाँच समिति के निर्माण की घोषणा करते हैं। इस समिति की अध्यक्षा स्वयं महारानी होंगी। वे एक कलात्मक विवरण हमें इस तथाकथित भुखमरी पर देंगी। सज्जनो, आप देखेंगे—हम क्षण मात्र में इस समस्या का हल कर देंगे। भाषणमन्त्री! सूचनाएँ। हम स्वयं महारानी को आदेश देने जा रहे हैं।

(राजा का प्रस्थान)

भाषणमन्त्री : भुखमरी की जाँच के लिए शुतुरनगरी की कलामन्त्री नियुक्त कर दी गयी हैं। सचाई मालूम होते ही समस्या हल कर दी जाएगी।

(पृष्ठभूमि में सूचनाएँ प्रसारित होती हैं, अन्तिम स्वर के साथ भीड़ का शोर पुनः उभरता है।)

रक्षामन्त्री : कितनी विचित्र बात है—हमारे देखते-देखते मामूलीराम

महत्त्वपूर्ण हो गया।

भाषणमन्त्री : एक दृष्टि से तो हो ही गया है।

रक्षामन्त्री : एक दृष्टि से क्यों?

भाषणमन्त्री : जन-दृष्टि से वह महत्त्वपूर्ण है—और राजकीय दृष्टि से होते-होते रह गया।

रक्षामन्त्री : क्या मतलब?

भाषणमन्त्री : मतलब यह कि राजकीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होने के लिए महाराज के साथ एकान्त में रुकना बहुत आवश्यक है। एक बार विरोधीलाल रुका तो सुबोधीलाल हो गया—इसलिए जब मामूलीराम ने महाराज के साथ अधिक समय लगाया तो मुझे युक्ति से काम लेना पड़ा।

महामन्त्री : युक्ति से काम लेना पड़ा?

भाषणमन्त्री : और क्या ? मैंने सोचा कि महाराज यदि इसी प्रकार विरोधियों का परिवर्तन सुबोधियों में करते रहे तो हम सबका भविष्य अन्धकार में....परन्तु तभी मुझे महाराज का संकेत मिला।

महामन्त्री : महाराज का संकेत मिला?

भाषणमन्त्री : **(मुसकराकर)** हाँ महामन्त्री जी, और उनका संकेत मिलते ही मैंने मामूलीराम के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

रक्षामन्त्री : आपने ठीक ही किया, भाषणमन्त्री जी। हमारे लिए इससे बड़ा संकट और क्या हो सकता था! उधर महाराज ने आज्ञा दे दी है । मामूलीराम नाम के इस व्यक्ति का हम समूल नाश कर देंगे।

महामन्त्री : मामूलीराम—एक व्यक्ति का नाम नहीं रक्षामन्त्री—वह एक सामूहिक भावना का नाम है। इस भावना का दमन युद्ध से नहीं, केवल प्रेम से सम्भव है। हम मामूलीराम को प्रेम करना सीखें और उसकी समस्याओं को दूर करना।

रक्षामन्त्री : यदि महाराज को मालूम हो गया कि हम मामूलीराम को प्रेम कर रहे हैं तो अनर्थ हो जाएगा।

महामन्त्री : इसी अनर्थ में अब हमारा कल्याण है।

भाषणमन्त्री : अगर हमारा कल्याण निश्चित हो तब तो सोचना पड़ेगा।

रक्षामन्त्री : मैं आप से सहमत हूँ, भाषणमन्त्री जी।

महामन्त्री : अब प्रश्न यह है कि मामूलीराम की सबसे बड़ी समस्या क्या है?

भाषणमन्त्री : भूख।

महामन्त्री : नहीं, भाषणमन्त्री। महाराज और मामूलीराम, इन दोनों की सबसे बड़ी समस्या शुतुरमुर्ग़ है। यदि किसी प्रकार हम इस शुतुरमुर्ग़ को तोड़ सकें तो बात बन सकती है। इस कार्य में हम सुबोधीलाल का सहयोग भी ले सकते हैं।

भाषणमन्त्री : लेकिन अब तो शुतुरमुर्ग़ के उद्घाटन का समय निकट आ रहा है। **(मुसकराकर)** सुबोधीलाल जी महाराज से दो सहस्र मुद्राएँ लेकर उस पर स्वर्णछत्र की स्थापना करने गये हैं।

रक्षामन्त्री : और सुबोधीलाल हमारे प्रस्ताव का विरोध भी कर सकता है?

महामन्त्री : विरोध करना सुबोधीलाल का स्वभाव नहीं, रक्षामन्त्री, उसकी आवश्यकता है। यदि उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है तो वह निश्चित ही हमारा साथ देगा।

भाषणमन्त्री : लेकिन महाराज का क्या होगा? शुतुरमुर्ग़ तोड़ने की योजना से तो वे स्वयं टूट जाएँगे।

महामन्त्री : इस समय महाराज की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। देश सर्वोपरि है। मामूलीराम को सन्तुष्ट करके ही स्थितियों पर नियन्त्रण पाया जा सकता है। और मामूलीराम तभी सन्तुष्ट हो सकता है जब शुतुरमुर्ग़ टूटे। मैं राजद्वार पर सुबोधीलाल की प्रतीक्षा करने जा रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि शुतुरमुर्ग़ तोड़नेवाली बात उसने भी सोची होगी।

भाषणमन्त्री : लेकिन वह तो स्वर्णछत्र की स्थापना करने गया है। वह ऐसी बात कैसे सोच सकता है?

महामन्त्री : महान् प्रतिभाएँ सदैव एक सा सोचती हैं।

(महामन्त्री का प्रस्थान—दासी का प्रवेश)

दासी : सावधान...सावधान...जाँच-समिति की अध्यक्षा शुतुरनगरी की कलामन्त्री—महारानी पधार रही हैं।

(महारानी का मुसकराते हुए प्रवेश—दासी और मन्त्रिगण सादर झुकते हैं।)

रानी : महाराज ने आज्ञा दी है कि मैं भूख-समस्या पर एक सुन्दर और सही विवरण लिखकर उन्हें दूँ। इस कार्य में मुझे आप

लोगों की सहायता चाहिए।

रक्षामन्त्री : आज्ञा दीजिए, महारानी। हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?

रानी : **(ससंकोच)** मैंने तो कभी भूख से मरता हुआ आदमी देखा नहीं है। अतः मेरी प्रार्थना है कि मुझे एक ऐसा मनुष्य ला दीजिए।

भाषणमन्त्री : आप आज्ञा दीजिए। महारानी, एक क्या यदि आप कहें तो हम एक सहस्र भूख से मरते व्यक्ति एकत्र कर दें।

रानी : नहीं, मेरा कार्य केवल एक व्यक्ति से चल जाएगा। कहीं कोई विवाद न खड़ा हो जाय इसलिए आप दोनों ही इस कार्य को गुप्त रूप से कर दें।

भाषणमन्त्री : हम स्वयं ही यह कार्य करेंगे, महारानी।

रानी : धन्यवाद, भाषणमन्त्री जी। पर इतना अवश्य देख लीजिएगा कि लाया जानेवाला व्यक्ति भूख से ही मर रहा हो—उसे कोई और व्याधि या रोग न हो।

भाषणमन्त्री : हम अच्छी तरह ठोंक-बजाकर देख लेंगे, महारानी।

(दोनों मन्त्रियों का तेजी से प्रस्थान)

रानी : दासी?

दासी : महारानी।

रानी : क्यों री? तू इतनी आतंकित क्यों है?

दासी : **(सभय)** कुछ नहीं महारानी...कुछ नहीं।

रानी : तू अपनी स्वामिनी से झूठ बोलती है—बता न क्या बात है?

दासी : **(विषयान्तर)** अतिथियों को स्वर्णपत्र बाँट आऊँ— महारानी?

रानी : अभी तो अतिथि भोजन कर ही रहे हैं। यहाँ से निपटकर स्वर्णपत्र बाँटने का कार्य तो मैं स्वयं करूँगी। सुन, तूने कभी भूख से मरता हुआ मनुष्य देखा है?

दासी : **(अचकचाकर)** जी हाँ...महारानी...देखा है।

रानी : (निकट आकर) देखा है? **(प्रसन्नता से)** कहाँ री? कब? कैसे? मुझे बता न?

दासी : **(भरे कण्ठ से)** बहुत समय पहले की बात है—तब मैं बहुत छोटी थी। मेरे गाँव में भयंकर अकाल पड़ा था।

रानी : **(बाल-सुलभ उत्सुकता के साथ)** अच्छा?

दासी : सारे नदी-पोखर सूख गये।

रानी : फिर क्या हुआ?

दासी : सारा अन्न समाप्त हो गया।

रानी : अच्छा?

दासी : हाँ, महारानी। लोगों के शरीर से मांस विलीन हो गया, भूख की ज्वालाओं से उनके पेट में गड्ढे पड़ गये। बैठनेवाले उठ नहीं पाये, उठनेवाले बैठ नहीं पाये और वे सब जीवित प्रेतों की तरह मुरदों की नगरी में पड़े-पड़े मौत की प्रतीक्षा करते रहे।

रानी : (उत्सुकता की चरम सीमा) फिर क्या हुआ?

दासी : और फिर वे मरने लगे।

(रानी दासी को प्रसन्नता से गले लगाती है।)

रानी : तू कितनी भाग्यशालिनी है, तूने यह सब देखा है। मेरी मनःस्थिति तो आज ठीक वैसी ही है जैसे मैं जीवन की पहली परीक्षा देने जा रही हूँ। तेरा वर्णन तो एकदम सजीव है, इस विवरण को लिखने में मेरी सहायता करेगी?

दासी : नहीं, महारानी।

रानी : क्यों?

दासी : भूख से मरनेवाला आदमी मुझसे देखा नहीं जाएगा।

रानी : पर तू एक बार तो देख चुकी है।

दासी : तब मैं छोटी थी, महारानी। बिलकुल अबोध। लेकिन अब... अब...मुझसे मरता हुआ मनुष्य नहीं देखा जाएगा महारानी!

(दासी रुलाई पर नियन्त्रण करके अन्दर भाग जाती है। रानी हँसती है। दूसरी ओर से रक्षामन्त्री और भाषणमन्त्री का प्रवेश। वे एक खाट पकड़े हैं, जिस पर एक वृद्ध लेटा है और अचेत है। रानी उसे उत्सुकता से देखती है। वे खाट सिंहासन के नीचे रखते हैं।)

रानी : (प्रश्न) कहाँ मिला?

भाषणमन्त्री : यहीं, राजद्वार के पास।

रानी : सही व्यक्ति है न?

भाषणमन्त्री : हमने पूरी जाँच-पड़ताल कर ली है।

रानी : लेकिन इसकी आँखें क्यों बन्द हैं?

भाषणमन्त्री : भूख की पीड़ा से यह अचेत है।

रानी : अचेत है—पर कहीं मर न गया हो?

भाषणमन्त्री : हमने यह भी ठीक से देख लिया है। यह मरा हुआ आदमी नहीं...मरता हुआ आदमी है।

रानी : बहुत-बहुत धन्यवाद। अब मैं अपना कार्य प्रारम्भ करूँ ?

(रानी लेखनी उठाती है।)

भाषणमन्त्री : अभी आपको थोड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

रानी : प्रतीक्षा करनी पड़ेगी?

भाषणमन्त्री : हाँ, महारानी। यह व्यक्ति मरने से पहले की स्थिति में है। जब तक यह अन्तिम बार आँखें नहीं खोलता, तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

रानी : (विवशता से) तो आइए हम लोग प्रतीक्षा करें।

(रानी वहीं सिंहासन के पास नीचे बैठ जाती है। दोनों मन्त्री एक कोने में खड़े हो जाते हैं। तीनों उत्सुकता और आशामय नेत्रों से मरते हुए आदमी को देखते हैं। क्षण भर के विराम के बाद—मरते हुए आदमी में कुछ हल-चल होती है। और वह धीरे-धीरे उठकर बैठता है। फिर इधर-उधर देखता है।)

रानी : (प्रसन्नता से चीखकर) उसने आँखें खोल दीं—उसने अन्तिम बार आँखें खोल दीं।

(रानी अपनी लेखनी सँभालती है। वृद्ध फिर अचेत हो जाता है।)

रानी : (क्रोधित) दुष्ट कहीं का।

भाषणमन्त्री : महारानी! मरते हुए व्यक्ति से मीठे वचन बोलना शिष्टाचार है।

रानी : (प्रेम से) ऐ मरते हुए मनुष्य! तुम सचमुच महान् हो। तुम्हारा जीवन धन्य है कि तुम महाराज के काम आ रहे हो। सोचो तो, तुम पर हम कितना महान् परीक्षण कर रहे हैं। परीक्षण की सफलता एक बहुत बड़ी समस्या का हल होगी—और इसका श्रेय और सम्मान तुम्हें मिलेगा। लेकिन ऐसा हो सके इसलिए आँखें तो खोलो...

(वृद्ध अपनी आँखें खोलता है।)

उठकर बैठो...उठकर बैठो...

(वृद्ध उठकर बैठता है।)

बोलो...कुछ बोलो...

(वृद्ध कुछ अस्फुट स्वरों में कहता है। उसके शब्द सुनाई नहीं पड़ते। रानी और दोनों मन्त्री कान लगाकर सुनने की कोशिश करते हैं। रानी तुरत कुछ लिखती है।)

अब खड़े हो जाओ...शाबाश...हिम्मत करो।

(वृद्ध खड़ा हो जाता है, स्थिर जकड़ा-सा। रानी कुछ लिखती है।)

अब धीरे-धीरे अपने पैर उठाओ...चलो...

(रानी कुछ दूर जाकर खड़ी हो जाती है।)

मेरे पास आओ...आओ...आओ मेरे पास।

(वृद्ध डगमगाते पैरों से आगे बढ़ता है। रानी उसे चलने के लिए बराबर उत्साहित करती जाती है—और कुछ लिखती जाती है। वृद्ध उसके निकट पहुँच जाता है।)

बस—अब लौट जाओ—जाओ।

(वृद्ध सिर झुकाकर खाट तक आता है, रानी कुछ लिखती है।)

बैठो।

(वृद्ध बैठता है—रानी लिखती है)

लेट जाओ...

(वृद्ध लेटता है—रानी लिखती है।)

अब आँख बन्द कर लो और मर जाओ।

(वृद्ध आँखें बन्द कर लेता है—रानी लिखती है। वृद्ध का सिर एक ओर लटक जाता है। दोनों मन्त्री उसकी नाड़ी की परीक्षा करते हैं।)

भाषणमन्त्री : अन्त हो गया।

(दोनों मन्त्री निरपेक्ष भाव से खाट को उठाकर बाहर ले जाते हैं।)

रानी : (प्रसन्नता से चीखकर) अन्त हो गया...(लिखती है) अन्त हो गया। मरते हुए महामानव के महाकाव्य का अन्त हो गया!

(रानी अपने विवरण में कुछ संशोधन करती है और वही पंक्ति दोहराती है। क्षण भर बाद बाहर से दोनों मन्त्रियों

का प्रवेश। रानी उनको देखकर अचानक रोने लगती है।)

भाषणमन्त्री : (आश्चर्य) आपको प्रसन्न होना चाहिए, महारानी। आप... आप...रो क्यों रही हैं?

रानी : (आँसू पोंछकर) मैं तो भूल ही गयी थी, भाषणमन्त्री। मरने के बाद रोना शिष्टाचार है।

(दासी का प्रवेश)

दासी : सावधान! सावधान! शुतुरनगरी के महाराज पधार रहे हैं।

(रानी और दोनों मन्त्री आदर से झुकते हैं। राजा का प्रवेश)

राजा : (मुसकराकर) हमें विश्वास है जाँच-समिति की अध्यक्षा अपना कार्य कर चुकी हैं।

रानी : विवरण प्रस्तुत है, महाराज।

(रानी सादर विवरण-पत्र महाराज को देती है।)

राजा : हम प्रसन्न हैं महारानी, कि इतने आवश्यक कार्य छोड़कर आपने इस विवरण को तैयार करने में हमारी सहायता की।

(विवरण-पत्र उलट-पलटकर) ओह! इतना सुन्दर जाँच-पत्र—यह रंग-बिरंगी शुतुरलेखनी, स्वर्ण अक्षरों की यह सियाही। महारानी, हमें प्रसन्नता है कि आपने विवरण इतना आकर्षक बना दिया है।

रानी : भूख और मृत्यु को मेरी कला ने आकर्षक बना दिया है, महाराज। अब आप मूल समस्या को तुरत पहचान सकेंगे।

राजा : हमें विश्वास है। अब हम मूल समस्या का तुरत समाधान भी कर सकेंगे।

(दासी का प्रवेश)

दासी : भोज समाप्त हो गया है, महारानी। अतिथि आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

(रानी और दासी का प्रस्थान—राजा एक बार विवरण को सरसरी नजर से देखता है।)

राजा : (गम्भीरता से) तो मनुष्य पेट में भूख लगने से मर रहे हैं।

भाषणमन्त्री : आपका अनुमान सही है, महाराज।

राजा : हूँ, तो इसका अर्थ यह है कि भूख एक शारीरिक स्थिति है।

भाषणमन्त्री : यह भी सही है, महाराज।

राजा : और यदि हम किसी प्रकार इस शारीरिक स्थिति को हल कर

सकें तो समस्या हल हो जाएगी।

भाषणमन्त्री : बिलकुल समाप्त हो जाएगी।

राजा : (गम्भीरता से) हम शुतुरनगरी के महाराज, यह घोषणा करते हैं कि अब इस क्षण से हमारे देश में भूख की परिभाषा बदल गयी।

भाषणमन्त्री : (आश्चर्य से) भूख की परिभाषा बदल गयी?

राजा : हाँ, भाषणमन्त्री। भूख अब एक शारीरिक स्थिति नहीं बल्कि मनःस्थिति मानी जाएगी। पेट में भूख लगकर मरने का राज्य जिम्मेदार है—परन्तु मस्तिष्क में भूख लगने का नहीं। और चूँकि हमारी घोषणा के अनुसार भूख सिर्फ मस्तिष्क को लग सकती है। अतः इस नयी परिभाषा के अनुसार सदैव के लिए भूख-समस्या का अन्त—सत्यमेव जयते।

(दोनों मन्त्री अवाक् रह जाते हैं।)

भाषणमन्त्री, सूचनाएँ प्रसारित की जाएँ!

भाषणमन्त्री : **(घोषणा के स्वर में)** शुतुरनगरी के महाराज की आज्ञा से भूख अब एक शारीरिक स्थिति नहीं है। परिभाषा बदल जाने के कारण उसे मनःस्थिति कहा जाएगा।

(सूचनाएँ प्रसारित होती हैं।)

भाषणमन्त्री : क्षमा करें, महाराज। क्या परिभाषाओं का परिवर्तन समस्या हल कर सकेगा?

रक्षामन्त्री : भाषणमन्त्री ने बड़ा सार्थक सवाल पूछा है, महाराज।

राजा : समस्याएँ हल होना भविष्य की प्रतिक्रिया पर निर्भर है, भाषणमन्त्री। और हमें भविष्य की चिन्ता नहीं। हमें तो केवल वर्तमान प्रिय है। वर्तमान जो हमारा अपना है। जिसे हम जी रहे हैं। वर्तमान—जिसमें हमारा सोने का शुतुरमुर्ग़ बन रहा है और स्वर्णछत्र की स्थापना हो रही है।

(पृष्ठभूमि में भीड़ का शोर उभरता है—दासी का प्रवेश)

दासी : **(भयभीत)** महाराज की जय हो!

राजा : क्या समाचार है, दासी?

दासी : द्वारपाल ने समाचार भेजा है, महाराज। राजमहल के सामने खड़ी हुई भीड़ बहुत क्रुद्ध हो उठी है। कोई बड़ा उत्पात होने की आशंका है।

(दासी का प्रस्थान)

राजा : रक्षामन्त्री!

रक्षामन्त्री : महाराज!

राजा : स्थिति को नियन्त्रण में लाया जाए।

(महामन्त्री और विरोधीलाल का प्रवेश)

महामन्त्री : स्थितियाँ अब नियन्त्रण के बाहर चली गयी हैं, महाराज!

राजा : महामन्त्री....!

महामन्त्री : और अब इन बिगड़ी हुई स्थितियों को परिभाषा बदलकर भी ठीक नहीं किया जा सकता—महाराज!

राजा : परम सत्यवादी महामन्त्री, आप जीवन भर कटु सत्य कहते रहे और हम उनका आदर करते रहे। अब आज जब शुतुरमुर्ग़ पर स्वर्णछत्र की स्थापना हो रही है और उसके उद्घाटन की तिथि निकट है—आपको कम-से-कम एक प्रिय सत्य बोलना चाहिए।

महामन्त्री : सत्य सदैव कटु होता है, महाराज। लेकिन मैं आज आपकी सुविधा के लिए एक प्रिय सत्य बोलूँगा।

राजा : हम प्रसन्न हुए, महामन्त्री।

महामन्त्री : **(गम्भीरता से)** शुतुरमुर्ग़ टूट रहा है।

राजा : शुतुरमुर्ग़ टूट रहा है? कौन तोड़ रहा है उसे? किसने ऐसा दुस्साहस किया? कौन है वह?

महामन्त्री : **(शान्ति से)** मामूलीराम।

राजा : मामूलीराम ? **(राजा अचानक हँसता है)** यही है आपका प्रिय सत्य?

महामन्त्री : यह मेरा दुर्भाग्य है महाराज, कि आपने और देश ने मुझे हमेशा कटु सत्य बोलने को मजबूर किया। पर इसे अपना सौभाग्य मानकर आज मैंने अन्तिम सत्य बोला है।

राजा : अन्तिम क्यों?

महामन्त्री : क्योंकि बदली हुई परिभाषाओं के इस देश में अब और कब तक हमारा अस्तित्व सुरक्षित रहेगा?

राजा : जब तक हम उसे रख सकेंगे।

महामन्त्री : हम उसे कब तक रख सकेंगे?

राजा : जब तक वह रहेगा।

महामन्त्री : महाराज, अब और अधिक भागने की आवश्यकता नहीं। शुतुरनगरी की स्थिति गम्भीर है। हमें कुछ-न-कुछ तुरत करना होगा।

भाषणमन्त्री : यदि हमने कुछ न किया, महाराज, तो अनर्थ हो जाएगा।

विरोधीलाल : वह सब कुछ जो हमें इतने त्याग और बलिदान के पश्चात् मिला है, मिट्टी में मिल जाएगा।

रक्षामन्त्री : हमारा सर्वनाश हो जाएगा।

राजा : पर जो सर्वोत्तम है, हम वही तो कर रहे हैं, हम और क्या कर सकते हैं?

महामन्त्री : हम शुतुरमुर्ग़ तोड़ सकते हैं।

राजा : **(चीखकर)** महामन्त्री!

महामन्त्री : शुतुरनगरी के एकमात्र सत्यवादी की हैसियत से मैं जो कहूँगा, सच कहूँगा, पूरा सच कहूँगा और सच के सिवा कुछ न कहूँगा। महाराज से लेकर मामूलीराम तक की यात्रा करने पर सिर्फ एक निष्कर्ष मेरे हाथ लगा है। आप दोनों की समस्या एक है—वही शुतुरमुर्ग़! दरअसल हमारे देश में सिर्फ एक समस्या है—शुतुरमुर्ग़! आप सोने का शुतुरमुर्ग़ बनवाने पर लगे हैं और मामूलीराम उसे तुड़वाने पर। कोई भी महान् परिवर्तन अब इन दोनों स्थितियों में समझौता करने से ही सम्भव है। यदि हम स्वयं शुतुरमुर्ग़ तोड़ दें तो भीड़ का खोया हुआ विश्वास हमें फिर मिल सकता है।

राजा : लेकिन हम उसे कैसे तोड़ सकते हैं? आप सब तो जानते ही हैं कि हम उसे तोड़ने की आज्ञा क्यों नहीं दे सकते। सज्जनो, क्या आप चाहते हैं कि हमारा युग-युगान्तर का स्वप्न जो एक सोने की सुन्दर प्रतिमा में ढल चुका है, टूट जाय? क्या हमारे परम सत्य का प्रतीक शुतुरमुर्ग़ विघटित हो जाय?

महामन्त्री : महाराज! यह भावनाओं में डूबने का समय नहीं। हमें ठोस धरातल पर खड़े होकर कुछ निर्णय करने हैं।

राजा : हम और कोई भी निर्णय लेने को तैयार हैं लेकिन शुतुरमर्ग़

...नहीं...महामन्त्री, हम अपने शुतुरमुर्ग़ से सम्बन्धित कोई बात नहीं सुनना चाहते।

महामन्त्री : क्या आपका शुतुरमुर्ग़ सदैव जीवित रहेगा?

राजा : हाँ, महामन्त्री, वह सदैव जीवित रहेगा।

महामन्त्री : क्यों, क्या वह अमर है?

राजा : नहीं, महामन्त्री, शुतुरमुर्ग़ का दर्शन अमर है। कोई-न- कोई उत्तराधिकार में उसे पाता रहेगा, स्वर्ण-प्रतिमाएँ बनती रहेंगी और स्वर्णछत्र की स्थापनाएँ होती रहेंगी।

विरोधी लाल : और यदि स्वर्णछत्र की स्थापना न हुई हो, तो?

राजा : तो पुनः प्रयास किया जाएगा।

विरोधीलाल : महाराज, स्वर्णछत्र की स्थापना नहीं हुई है।

राजा : क्यों?

विरोधीलाल : देश की स्थिति देखकर मुझे अपनी योजना बदलनी पड़ी।

राजा : **(व्यंग्य से)** देश की स्थिति देखकर कोई और योजना बनायी है आपने?

विरोधीलाल : हाँ, महाराज! शुतुरमुर्ग़ को तोड़ने की।

राजा : **(चीखकर)** सुबोधीलाल जी!

रक्षामन्त्री : सुबोधीलाल जी बिलकुल ठीक कह रहे हैं, महाराज।

भाषणमन्त्री : देश का और हम सबका कल्याण इसी में है कि शुतुरमुर्ग़ टूट जाए।

महामन्त्री : महाराज! हम आपको और अपने आपको बचाने का अन्तिम प्रयास कर रहे हैं। शुतुरमुर्ग़ के टूट जाने से भीड़ एक बार फिर शान्त हो जाएगी—आपकी शक्ति और आपका सिंहासन एक बार फिर सुरक्षित हो जाएगा। और हम सबको जीवित रहने का अवसर एक बार फिर मिल सकेगा।

(राजा चिन्तित है।)

यदि महाराज को हमारी प्रार्थना स्वीकार नहीं—तो हमें अपने जीवन का सबसे अप्रिय कार्य करना पड़ेगा।

राजा : **(चौंककर)** क्या...क्या...करेंगे आप?

महामन्त्री : हम महाराज को समस्याओं से उलझता हुआ छोड़कर चले जाएँगे।

राजा : चले जाएँगे? कहाँ चले जाएँगे?

महामन्त्री : कहीं भी। राजमहल के बाहर, शुतुरनगरी के बाहर।

राजा : आप सब? आप सब चले जाएँगे?

विरोधीलाल : मुझे दुख है, महाराज...लेकिन मुझे वही करना पड़ेगा जो महामन्त्री ने कहा है।

राजा : और आप लोग?

(भाषणमन्त्री और रक्षामन्त्री सादर झुकते हैं।)

भाषणमन्त्री : मैं सुबोधीलाल जी से सहमत हूँ, महाराज।

रक्षामन्त्री : और मैं भाषणमन्त्री से।

राजा : और यदि हम शुतुरमुर्ग़ को तोड़ने की आज्ञा दे दें, तो?

महामन्त्री : तो हम यहीं रहेंगे सदैव की भाँति, यह सिंहासन और शुतुरराज्य आपका रहेगा, सदैव की भाँति।

राजा : आप वचन देते हैं।

महामन्त्री : शुतुरनगरी के सबसे बड़े सत्यवादी की हैसियत से जो कुछ कहूँगा, सच कहूँगा, पूरा सच कहूँगा। यदि महाराज शुतुरमुर्ग़ तोड़ने की आज्ञा दे दें तो हम वचन देते हैं कि शुतुरनगरी का राज्य और सिंहासन महाराज का रहेगा। सत्यमेव जयते।

सभी मन्त्री : **(एक साथ)** सत्यमेव जयते।

राजा : **(मुसकराकर)** इस वचन के आधार पर कि हमारा सिंहासन हमारे पास रहेगा, हम अपने योग्य मन्त्रियों की सलाह पर शुतुरमुर्ग़ तोड़ने की आज्ञा देते हैं।

भाषणमन्त्री : **(सोल्लास)** महाराज की...

सब मन्त्री : जय हो!

राजा : परन्तु, सज्जनो, हम शुतुरमुर्ग़ तोड़ने का व्यय कैसे पूरा करेंगे। राजकोष का सारा धन तो उसे बनवाने में लग गया। अब तो उसमें एक फूटी कौड़ी भी नहीं है।

महामन्त्री : हम सुरक्षित राजकोष का उपयोग कर सकते हैं।

राजा : परन्तु वह तो हमारी व्यक्तिगत सम्पत्ति है।

महामन्त्री : व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए हमें व्यक्तिगत सम्पत्ति का उपयोग करना चाहिए।

राजा : परन्तु इसमें व्यय कितना आएगा?

विरोधीलाल : हम लोगों ने सब आँकड़े तैयार कर लिये हैं, महाराज! शुतुरमुर्ग़ बनवाने में जितना धन लगा, तुड़वाने में भी लगभग इतना ही लगेगा।

(राजा कुछ सोचने के पश्चात् महामन्त्री की ओर बढ़ता है।)

राजा : यह है सुरक्षित राजकोष की ताली। परम सत्यवादी महामन्त्री जी! आपने जो वचन हमें दिया है उसके लिए उपहार में हमारी यह तुच्छ भेंट।

महामन्त्री : **(ताली लेकर)** आपके शुभ जन्मोत्सव पर स्वयं हमें कुछ भेंट करना चाहिए था, महाराज। पर घटनाएँ कुछ इस तीव्रता से घटीं। खैर, हम अभी भी कुछ-न-कुछ दे सकते हैं। अब हमें आज्ञा दीजिए, महाराज! शुतुरमुर्ग़ के बनवाने से कम कार्य तुड़वाने में नहीं है। कार्य का सही विभाजन हो सके इसलिए, कुछ क्षणों के लिए हम सभी को जाना होगा। आइए, सज्जनो।

(चारों मन्त्री अभिवादन करके बाहर जाते हैं, राजा मुसकराते हुए उन्हें जाता देखता है। तुरत पृष्ठभूमि से भीड़ का शोर उभरता है। राजा की मुखमुद्रा बदल जाती है। वह चिन्तित हो उठता है।)

(रानी का प्रवेश)

रानी : **(घोषणा)** महाराज की जय हो!

राजा : **(उसी ओर देखता हुआ)** क्या समाचार है, दासी?

रानी : शुतुरनगरी के महाराज से मामूलीराम जी मिलने आये हैं।

राजा : **(साश्चर्य)** महारानी, आप? दासी कहाँ है?

रानी : वह तो राजमहल से बाहर चली गयी।

राजा : और दासियाँ ? नौकर-चाकर ? प्रहरी, द्वारपाल, अंगरक्षक?

रानी : वे सब भी चले गये हैं।

राजा : **(क्रोधित)** कहाँ चले गये हैं? और क्यों चले गये हैं?

रानी : यही प्रश्न तो मैं भी पूछना चाहती थी, महाराज। लेकिन

किससे पूछूँ? राजमहल में आपको और मुझे छोड़कर अब कोई नहीं है।

राजा : कोई नहीं है, राजमहल में अब कोई नहीं है। कहाँ चले गये ये सब? कहाँ चले गये?

रानी : **(मुसकराकर)** महाराज, मैं जो हूँ आपके साथ। आप बिलकुल भयभीत न हों।

राजा : कौन कहता है कि हम भयभीत हैं। हम, शुतुरनगरी के महाराज किसी से भयभीत नहीं। हमें...हमें...तो केवल प्रतीक्षा है।

रानी : प्रतीक्षा है? किसकी?

राजा : अपने योग्य मन्त्रियों की और उस वचन की जो उन्होंने हमें दिया है।

रानी : कौन-सा वचन?

राजा : **(अचानक मुसकराकर)** वही जो हमने महारानी को अपने विवाह पर दिया था। सदैव-सदैव तुम्हारा रहने का वचन।

रानी : महाराज, आज आपको क्या हो गया है?

राजा : **(अचानक)** महारानी, आओ, हम लोग प्यार करें।

रानी : **(भयभीत)** महाराज!

राजा : आह! कितना मधुर है तुम्हारा संकेत। महारानी, ऐसा लगता है कि समय रुक गया है। सारा युग धड़कते हृदय से हमारे मधुर मिलन की प्रतीक्षा कर रहा है। मुझे बहुत अन्दर से यह लग रहा है कि बहुत शीघ्र हम तुम्हारा आलिंगन करेंगे। हम यह सोच रहे हैं कि वह सब कितना सुखद होगा। आओ, हमारे निकट आओ...आओ...

(राजा स्वयं रानी की ओर बढ़ता है।)

रानी : महाराज, मुझे...मुझे भय लग रहा है।

राजा : भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं। हम जो हैं तुम्हारे साथ। हम शुतुरनगरी के महाराज!

(रानी भयभीत-सी अन्दर चली जाती है, राजा का मधुर हास्य। दूसरी ओर से मामूलीराम का प्रवेश—मामूलीराम की मुद्राओं में अब दृढ़ विश्वास है।)

राजा : **(चौंककर)** तुम...!

मामूलीराम : हाँ महाराज...मैं।

(मामूलीराम चुपचाप राजा की ओर बढ़ता है।)

राजा : **(भयभीत-सा सिंहासन की ओर हटता हुआ)** तुम...तुम...अब क्या चाहते हो...?

(राजा सिंहासन पर बैठ जाता है।)

मामूलीराम : **(गम्भीरता से)** महाराज, मैं आप से कुछ कहने आया हूँ।

राजा : तुम...अब और क्या कहना चाहते हो? हमने तुम्हारी माँग स्वीकार कर ली है। **(मुसकराकर)** हाँ, मामूलीराम, तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिए। हमने शुतुरमुर्ग़ तोड़ने की आज्ञा दे दी है।

मामूलीराम : **(साश्चर्य)** परन्तु, महाराज, शुतुरमुर्ग़ को तोड़ने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। सोने का शुतुरमुर्ग़ तो कभी बना ही नहीं।

राजा : मामूलीराम!

मामूलीराम : सारी शुतुरनगरी जानती है महाराज, कि सोने का शुतुरमुर्ग़ कभी नहीं बना।

राजा : **(स्तम्भित)** इतनी बड़ी दुर्घटना हमारे पूर्व ज्ञान और सहमति के बिना हो गयी? और हमें इसका पता भी न चला। **(पीड़ा से)** देश का सारा धन, सारी प्रतिभा, सारा वैभव हमने शुतुरमुर्ग़ बनवाने में लगा दिया!

मामूलीराम : और जो शेष था उसे तुड़वाने में—

राजा : परन्तु हमारे योग्य मन्त्री...

मामूलीराम : आपके योग्य मन्त्रियों ने आपके साथ बहुत बड़ा छल किया है। महाराज, आपका सोने का शुतुरमुर्ग़ सिर्फ कागज पर बना होगा—और कागज पर ही टूट गया। **(कटुता)** लेकिन असली शुतुरमुर्ग़ तो आप हैं, जो हमें खाकर और हमें पीकर अपने आपको बनाते रहे।

राजा : यह समय हमारी आलोचना करने का नहीं, मामूलीराम। सोचना तो यह है कि देश-हित के लिए अब क्या होना चाहिए? तुम...तुम...हमें भीड़ के सामने ले चलो। हम सामूहिक रूप से अपनी त्रुटियाँ स्वीकार करेंगे। यदि भीड़ हमारी शक्ति और हमारा सिंहासन देने का वचन देगी, तो

हम नये सिरे से हर बात की जाँच करेंगे। भ्रष्टाचारी मन्त्रियों को हम कठोर दण्ड देंगे। हमें भीड़ की शरण में ले चलो, मामूलीराम। हम वचन देते हैं—जैसा भीड़ कहेगी, हम वैसा ही करेंगे।

मामूलीराम : **(व्यंग्य से)** फिर आप हमारी माँगें पूरी कर देंगे?

राजा : पूरी कर देंगे।

मामूलीराम : **(व्यंग्य से)** फिर सबको सब-कुछ मिलेगा ?

राजा : हाँ, मामूलीराम, सबको सब-कुछ मिलेगा—एक साथ मिलेगा—तुरत मिलेगा। **(भयभीत)** हम वचन देते हैं।

(मामूलीराम अविचल है।)

(चीखकर) हम वचन देते हैं।

मामूलीराम : महाराज, या तो आप बहुत अच्छे अभिनेता हैं और या फिर महामूर्ख।

राजा : तो...तो क्या, तुम्हें हमारे वचन पर विश्वास नहीं!

मामूलीराम : नहीं।

राजा : तो...तो तुम हमें भीड़ के सामने नहीं ले चलोगे?

मामूलीराम : भीड़ के सामने आपको जाना ही होगा।

राजा : **(प्रसन्न)** मामूलीराम।

मामूलीराम : **(कठोर)** सामूहिक क्षमा के लिए नहीं, सामूहिक दण्ड के लिए। चलिए।

(मामूलीराम राजा की ओर बढ़ता है। राजा सिंहासन के पीछे छिप जाता है। तभी नेपथ्य में 'महाराज की जय हो' के नारे लगते हैं। चारों मन्त्री सिंहासन के पास जाकर अभिवादन करते हैं।)

महामन्त्री : **(उसके हाथ में रेशमी कपड़े से ढका हुआ एक थाल है।)** महाराज की जय हो! अपने शुभ जन्मोत्सव पर हम स्वामिभक्त मन्त्रियों का यह तुच्छ उपहार स्वीकार करें।

(राजा मुसकराता हुआ सिंहासन के पीछे से निकल आता है और रेशमी कपड़ा हटाता है।)

राजा : **(थाल से रस्सी उठाकर भयभीत-सा)** यह...यह...क्या है?

महामन्त्री : **(सदैव की भाँति गम्भीर ओजपूर्ण स्वर)** नागपाश।

राजा : नागपाश? क्यों? किस के लिए?

महामन्त्री : यह आपके लिए है, महाराज। आपकी मानसिक अवस्था देखकर हम यह तुच्छ उपहार लाये हैं। आपकी आज्ञा लेकर हम आपको इसी नागपाश से बाँध देंगे।

राजा : पर हम इसकी आज्ञा नहीं दे सकते।

महामन्त्री : तो हमें अपनी इच्छा से यह करना होगा। देश और आपके प्रति हमारी जिम्मेदारी है। आपके असभ्य व्यवहार से आपकी प्रतिष्ठा गिर सकती है। राजा को सदैव राजा की तरह व्यवहार करना होगा। इसलिए आपकी मानसिक अवस्था देखते हुए हम आपको बाँधना चाहेंगे।

राजा : पर क्यों? हम तो स्वस्थ हैं। बिलकुल स्वस्थ।

महामन्त्री : हम आपको विश्वास दिलाते हैं महाराज, कि आप स्वस्थ नहीं हैं। शुतुरमुर्ग टूटने से आपकी मानसिक दशा शोचनीय हो गयी है।

राजा : परन्तु शुतुरमुर्ग तो कभी बना ही नहीं, उसके टूटने का प्रश्न नहीं उठता।

महामन्त्री : कौन कहता है कि शुतुरमुर्ग नहीं बना?

राजा : मामूलीराम और भीड़। अब तुम लोग हमें और अधिक धोखे में नहीं रख सकते। अब हमें सब-कुछ मालूम हो चुका है। इतना बड़ा षड्यन्त्र, इतनी बड़ी दुष्टता। शुतुरमुर्ग बनवाने और तुड़वाने के नाम पर आप पूरा देश खा गये। हम तो मामूलीराम और भीड़ के आभारी हैं कि सही सूचना हमें मिल गयी।

महामन्त्री : मामूलीराम के आभारी हम भी हैं कि इन्होंने सही सूचना आपको दी, हम कृतज्ञ हैं इसलिए महाराज के जन्मोत्सव पर दिया जानेवाला उपहार अब इन्हें देंगे।

मामूलीराम : क्यों? मैं न तो अस्वस्थ हूँ और न मूर्ख।

महामन्त्री : हम जानते हैं कि तुम बुद्धिमान हो गये हो, मामूलीराम! इसलिए अब तुम्हारा रस्सी से बाँधा जाना बहुत आवश्यक है।

(महामन्त्री के संकेत पर रक्षामन्त्री, विरोधीलाल,

भाषणमन्त्री मामूलीराम को बलात् पकड़कर शुतुरसिंहासन से बाँध देते हैं।)

महामन्त्री : **(मामूलीराम से सादर)** मामूलीराम जी, सबसे बड़े सत्य का उद्घाटन करने के उपलक्ष्य में हमारा अभिनन्दन स्वीकार करें। **(महामन्त्री मामूलीराम को सादर तमाचे मारता है, फिर झुककर अभिवादन करता है।)**

राजा : परम सत्यवादी महामन्त्री जी, सारा जीवन आप भी तो सत्य बोलते रहे—और हमें छलते रहे। अपने लिए क्या दण्ड सोचा है आपने?

महामन्त्री : आजीवन कारावास—इस सिंहासन पर बैठकर।

राजा : सिंहासन पर बैठकर! तुम! महामन्त्री! संसार के सबसे झूठे आदमी, इस सिंहासन पर बैठोगे?

महामन्त्री : हाँ, मैं परम सत्यवादी महामन्त्री—इस सिंहासन पर बैठूँगा, क्योंकि सत्य बोलना मेरे जीवन का धर्म नहीं, मेरी कूटनीति का अंग है। जब मैं सत्य बोलता था तो आप आतंकित होते थे और मुझे अधिक स्वर्णमुद्राएँ देते थे।

राजा : तो...तो यह तुम्हारा नकली चेहरा था। अब हम तुम्हारे असली चेहरे पहचान सकते हैं—**(चीखकर)** तुम सबके! तुम सब पापी हो...झूठे हो...नीच हो! सारा देश तुम्हें पहचान ले, इसलिए हम तुम्हें आज्ञा देते हैं कि तुम महादुष्टों का मुखौटा पहनकर हमारे सामने आओ! **(चीखकर)** जाओ।

महामन्त्री : हमें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है, महाराज। हम जानते थे कि एक क्षण ऐसा आएगा कि जब आप हमारे असली मुखौटे देखना चाहेंगे। हम इस अवसर के लिए तैयार होकर आये हैं, ताकि आपकी अन्तिम इच्छा पूरी हो सके।

राजा : अन्तिम इच्छा? क्या...क्या...तुम हमारी हत्या करोगे?

महामन्त्री : नहीं, महाराज। रक्तपात से हमें घृणा है। हमने तो यह सुना था कि महान् व्यक्तियों का जन्म और मृत्यु एक ही दिन होता है। सज्जनो, महाराज को कृतार्थ कीजिए। **(चारों मन्त्री एक कोने में जाकर भयंकर आकृतियों वाले मुखौटे पहनते हैं। फिर महाराज को एक साथ झुककर अभिवादन करते हैं।)**

राजा : **(विक्षिप्तता का आभास)** हाँ...अब ठीक है। इन भयंकर मुखौटों में तुम लोग कितने सुन्दर लग रहे हो! आह! ऐसा लगता है कि कुरूप सत्य चार भागों में विभाजित होकर हमारे सामने खड़ा है।

(राजा उन्हें देखकर पागलों की तरह अट्टहास करता है। महामन्त्री के संकेत पर मुखौटाधारी हाथ फैलाकर राजा की ओर बढ़ते हैं।)

राजा : **(भयभीत)** यह मुद्रा तो बहुत गन्दी है। तुम लोग वहीं खड़े रहो। चलने-फिरने से तुम्हारी भयंकरता और दुष्टता बहुत घिनौनी लगती है। हम आज्ञा देते हैं कि वहीं रुक जाओ। रुक जाओ वहीं—अब हमें तुम्हारी आकृतियों से भय लग रहा है।

(राजा दोनों हाथों से अपनी आँखें बन्द कर लेता है। मुखौटाधारी बराबर उसकी ओर बढ़ते हैं। वह इधर-उधर भागता है। वे भी वहीं जाते हैं। फिर राजा यवनिका की ओर भागता है।)

राजा : **(ऊँचा स्वर)** समझ गया...समझ गया...तुम लोग हमें निर्वासित करना चाहते हो। हमें निकालना चाहते हो। लेकिन अपने दिलों से हमें कैसे निकाल पाओगे? हम तुम्हें वरदान देते हैं कि तुम सब हमारे वंशज बनो। हमारी महान् परम्परा को आगे बढ़ाओ और परम सत्य के प्रतीक शुतुरमुर्ग़ की स्थापना करो।

(महामन्त्री के संकेत पर मुखौटाधारी राजा को धक्का देते हैं। राजा एक आर्तनाद के साथ मुख्य यवनिका के सामने आ जाता है। यवनिका बन्द हो जाती है। राजा अचानक **मुसकराते हुए दर्शकों की ओर मुड़ता है।)**

राजा : **(दर्शकों से)** यह तो हमें सदैव मालूम रहा कि शुतुरमुर्ग़ कभी नहीं बना और कभी नहीं टूटा। सोने का शुतुरमुर्ग़ तो हम इसलिए बनवा रहे थे क्योंकि सचेतन शुतुरमुर्ग़ हम स्वयं थे। शुतुरमुर्ग़ की स्थापना न तो हमारा दर्शन था, न स्वभाव और न धर्म। वह तो शक्ति और सत्ता सुरक्षित रखने की एक नीति थी। किसी-न-किसी बहाने से हम उन्हें

अधिक-से-अधिक स्वर्ण-मुद्राओं का दान देते रहे, ताकि वे अपने भोग-विलास में अधिक-से-अधिक व्यस्त रहें और हमारा सिंहासन सुरक्षित रहे। अब तो आप समझ गये होंगे कि हम एक राजा हैं और इस अनन्त नाटक के शाश्वत सूत्रधार। हाँ, अब मेरा 'हम' हम नहीं रहा, सूत्रधार हो गया हूँ न, इसलिए अब मैं केवल 'मैं' हूँ। स्वागत और नमस्कार!

(सूत्रधार अभिवादन करता है। रंगमंच पर अन्धकार हो जाता है।)

□□□